ॐ

यागमण्डल-पंचकल्याणक विधान

रचयिता

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

नवाचार्य श्री समयसागरजी महाराज के आज्ञानुवर्ती

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा० ब्र० संजय भैया, मुरैना

कृति	:	यागमण्डल-पंचकल्याणक विधान
आशीर्वाद	:	आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज नवाचार्य श्री समयसागरजी महाराज
सान्निध्य	:	निर्यापक श्रमण श्री अभयसागरजी महाराज ससंघ
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 3 से 9 दिसम्बर 2024, शिवनगर दमोह
संयोजक	:	बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	पंचम 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	50/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	1. बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना मोबाइल-9425128817 2. अरिहंत जैन (गोलू), सागर मोबाइल-8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट (विकास गोधा) भोपाल

पुण्यार्जक

श्री शांतिनाथ जिनालय शिवनगर दमोह

श्री जिनशरणं प्रचीन जिनालय दमोह

महिला मण्डल सिंघई मंदिर दमोह

विद्या सुव्रत संघ नन्हें मंदिर दमोह (म.प्र.)

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥1॥ तेरा...

जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥2॥ तेरा...

जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥3॥ तेरा...

हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥4॥ तेरा...

❑ ❑ ❑

मंगलाचरण

मंगलं भगवान्नर्हन् मंगलं सुसिद्धेश्वरः,
मंगलं श्रमणाचार्यो मंगलं साधुपाठकौ।
मंगलं जिननामानि मंगलं नवदेवता,
मंगलं शाश्वतमंत्रं मंगलं जिनशासनं॥

मंगलाष्टक स्तोत्र

[अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिन-शासनोन्-नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रया-राधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम्॥]

श्रीमन्-नम्र-सुरा-सुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत-रत्नप्रभा-,
भास्वत्-पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम् -भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन सिद्ध-सूर्य-नुगतास्-ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगि-जनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥१॥

सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्त-ममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति श्री - नगराऽधिनाथ-जिनपत्-युक्तोऽपवर्ग-प्रदः।
धर्मः सूक्ति-सुधा च चैत्य-मखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विध-ममी कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥२॥

नाभेयादि - जिनाः प्रशस्त-वदनाः-ख्याताश्-चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रति-विष्णु-लाङ्गलधराः सप्तोतरा विंशतिस्-
त्रैकाल्ये प्रथितास्-त्रिषष्टि-पुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥३॥

ये सर्वौषधि-ऋद्धयः सुतपसां वृद्धिङ्गताः पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्ग-महा-निमित्त-कुशलाश् चाष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञान-धरास्-त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥४॥

ज्योतिर्-व्यन्तर-भावनाऽ-मरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकार-गिरौ च कुण्डल-नगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥५॥

कैलासे वृषभस्य निर्वृति-मही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य-सज्जिनपतेः सम्मेद-शैलेर्-हताम्।
शेषाणा-मपि चोर्जयन्त-शिखरे, नेमीश्वरस्-यार्हतो,
निर्वाणा-वनयः प्रसिद्ध-विभवाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥६॥

सर्पो हारलता भवत्-यसिलता सत्पुष्प-दामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्न-मनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥७॥

यो गर्भाऽ-वतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषे-कोत्सवो,
यो जातः परि-निष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्य-पुरप्रवेश-महिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥८॥

इत्थं श्री जिन-मंगलाष्टक-मिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्-तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च-सुजनैर्-धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मी-राश्रयते व्यपाय-रहिता निर्वाण-लक्ष्मी-रपि॥९॥

[विद्यासागर विश्ववंद्य श्रमणं, भक्त्या सदा संस्तुवे।
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं, सर्वार्थ-सिद्धिप्रदं॥
ज्ञानध्यान-तपोभिरक्त-मुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रयं।
साकारं श्रमणं विशालहृदयं, सत्यं शिवं सुन्दरं॥]

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥
हरता अघ अँधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग-भूप॥५॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल॥८॥
तुम पद-पंकज पूजतैं , विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय॥९॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किए, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।

वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥१८॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ॥१९॥
जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार॥२०॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघ्नहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय ॥२२॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥२३॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव॥२४॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय॥२५॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगलकरण, हरो असाता कर्म॥२६॥
या विधि मंगल करन तें, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत॥२७॥

(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार)

❑ ❑ ❑

पूजन पीठिका

ॐ जय जय जय, नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्व-पापैः प्रमुच्यते॥१॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥२॥
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्व-विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥३॥
ऐसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्प-णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलम्॥४॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं॥५॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रम् नमाम्यहं॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥७॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं...।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनइष्ट(नाथ)महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन-अष्टोत्तरसहस्र-नामेभ्यो अर्घ्यं...।

तत्त्वार्थसूत्र जी अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री उमास्वामीजी-विरचित-तत्त्वार्थसूत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनस्तोत्रमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री मानतुंगाचार्य-विरचित भक्तामरस्तोत्राय एवं समस्त जिन-स्तोत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

तीन कम नौ कोटि मुनिराज अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे मुनिराजमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिन्यून-नवकोटि-मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्-त्रयेशं,
स्याद्वाद्-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतुः,
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥१॥

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करना चाहिए)

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।

स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्-भुत-वैभवाय॥२॥
स्वस्त्युच् छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद् गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥३॥
द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्य-वलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥४॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून् यनून मखिलान्य-यमेक एव।
अस्मिञ्ज्वलद् विमल-केवल-बोध-वह्नौ,
पुण्यं समग्र मह मेक मना जुहोमि॥५॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करना चाहिए)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीशम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

(इति जिनेन्द्र स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं...)

परमर्षि स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करना चाहिए)

नित्या-प्रकंपाद्-भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनःपर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ १॥
कोष्ठस्थ-धान्योपम-मेकबीजं, संभिन्नसंश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ २॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वाद-नघ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान्-मतिज्ञान-बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ३॥
प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ४॥
जंघानलश्रेणि-फलांबु-तंतु - प्रसून - बीजांकुर - चारणाह्वाः।
नभोऽगणस्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ५॥
अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपु-र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ६॥
सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धि-मथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ७॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर-पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ८॥
आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी-र्विषाविषा, दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ९॥
क्षीरं स्त्रवंतोऽत्र घृतं स्त्रवंतो, मधुस्त्रवंतोऽप्यमृतं स्त्रवंतः।
अक्षीणसंवासमहानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१०॥

(इति परमर्षिस्वस्ति मंगल विधानं परि पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

तेरी दो आँखें
तेरी ओर हजार
सतर्क हो जा

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव-देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिए हमको शरण॥

(दोहा)

नव-देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नवदेव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव-देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥

यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव-देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव-देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव-देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव-देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव-देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव-देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव-देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं---)

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री समयसागरजी महाराज का अर्घ्य (शंभु)

आचार्य श्री के लघुनंदन, पहले निर्यापक श्रमण मुनि।
जो मूलाचार निभाकर के, श्री समयसार से आत्म गुणी॥
श्री शांति वीर शिव ज्ञान तथा, विद्यागुरु जैसे श्रद्धालय।
इसलिए नमोस्तु कर बोलें, आचार्य समयसागर की जय॥

ॐ ह्रूं नवाचार्य श्री समयसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सिद्धभक्ति (प्राकृत गाथा)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं॥
मूलोत्तर पयडीणं, बंधोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडारया सव्वे॥
गमणागमण विमुक्के , विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं, णमो सया सव्व सिद्धाणं॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु मव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्काणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्त-सिद्धाणं अतीदाणागद-वट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्व-सिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहि-मरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

श्री यागमण्डल विधान प्रारंभ

स्थापना (दोहा)

पंच परम परमातमा, नवदेवा भगवान् ।
पूज्ययागमण्डल भजें, करके नमोस्तु ध्यान ॥

(ज्ञानोदय)

घाति विजेता जय अर्हन्ता, सिद्ध सिद्धि सम्राट हुए।
जिनशासन की शान श्रमण मुनि, भजकर अपने ठाठ हुए॥
आतम-रत्नों से झिलमिल ये, दुख चिंता के मेघ हरें।
पर्व प्रतिष्ठा निज में हो सो, नमोस्तु हम सिरटेक करें॥

ॐ ह्रीं जिनबिम्बप्रतिष्ठाविधाने सर्वयागमण्डलोक्ता जिनमुनय! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी/चाल)

प्रभु ज्ञान सुधा की धारा, संसार सुखा दें खारा।
हे! पंच परम-परमातम, हम करें नमोस्तु वंदन॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर-जिनमुनिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

प्रभु छाँव अनाकुल पाए, हम ताप मिटाने आए।
हे! पंच परम-परमातम, हम करें नमोस्तु वंदन॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर-जिनमुनिभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं...।

प्रभु ने की आत्म प्रतिष्ठा , हम चाहें अक्षय निष्ठा।
हे! पंच परम-परमातम, हम करें नमोस्तु वंदन॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर-जिनमुनिभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

चारित्र हार ज्यों पहना, सो मुक्ति हुई नत नयना।
हे! पंच परम-परमातम, हम करें नमोस्तु वंदन॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर-जिनमुनिभ्यः कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं...।

तुम बने रसिक आतम के, वह चखने हम आ धमके।
हे! पंच परम-परमातम, हम करें नमोस्तु वंदन॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर-जिनमुनिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

प्रभु आतम दीप जलाएँ, दीवाली भक्त मनाएँ।
हे! पंच परम-परमातम, हम करें नमोस्तु वंदन॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वरजिनमुनिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं...।

प्रभु कर्म बीज को झौंके, हम जीवन तुमको सौंपे॥
हे! पंच परम-परमातम, हम करें नमोस्तु वंदन॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर-जिनमुनिभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं...।

रत्नत्रय फल के गुच्छे, तुम सम पाएँ हम बच्चे।
हे! पंच परम-परमातम, हम करें नमोस्तु वंदन॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर-जिनमुनिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

तुम आतम अर्घ्य सजाए, हम भी उस पर ललचाए।
हे! पंच परम-परमातम, हम करें नमोस्तु वंदन॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर-जिनमुनिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रथम अर्घ्यावली (जोगीरासा)

भवसागर में डूबे जन के, तारण तरण बचैया।
मोक्षमहल तक जो पहुँचाते, अर्हत् राम-रमैया॥
ऐसे प्रभु अर्हंत पूज के, पर्व प्रतिष्ठा धारें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, स्वामी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं घातिकर्मविनाशक-अनंतचतुष्टयप्रकाशक अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १॥

कर्म हनन कर जगत भ्रमण तज, चेतन रूप सजाए।
तभी अष्ठ गुण व्यवहारिक पा, निश्चय अनंत पाए॥
चित् चैतन्य सिद्ध प्रभु भज के, पर्व प्रतिष्ठा धारें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, स्वामी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं अष्टगुणप्रकाशक सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २॥

मूलगुणों से जो श्रृंगारित, आत्म-किले में सोहें।
शिक्षा-दीक्षा दण्ड दान दें, फिर भी जग को मोहें ॥
श्री आचार्य पूज कर अब तो, पर्व प्रतिष्ठा धारें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, स्वामी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं दीक्षादायक आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ३॥

अंग-पूर्व का ज्ञान दीप ले, अघ अज्ञान मिटाते।
शंका की लंका को ढहकर, आतम नगर वसाते ॥
उपाध्याय निर्ग्रंथ पूजकर, पर्व प्रतिष्ठा धारें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, स्वामी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रदायक उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ४॥

जिनशासन के पता पताका, शुद्धातम को ध्याएँ।
चलते-फिरते तीर्थ सभी पर, शांति सुधा बरसाए।
सर्व साधुओं की पूजा कर पर्व प्रतिष्ठा धारें।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोस्तु, स्वामी हमको तारें॥

ॐ ह्रीं आत्मसाधनालीन साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ५॥

(हाकलिका)

जग में पहले मंगल जो, हरते पाप अमंगल वो।
मंगलमय अर्हंत नमो, करके नमोस्तु सुखी बनो॥

ॐ ह्रीं अर्हत्-मंगलाय अर्घ्यं...॥ ६॥

हरें कर्म का जो दल-दल, भक्तों का करते मंगल।
मंगलमय प्रभु सिद्ध नमो, करके नमोस्तु शुद्ध बनो॥

ॐ ह्रीं सिद्ध-मंगलाय अर्घ्यं...॥ ७॥

सर्वसाधु पाठक सूरि, परम दिगम्बर धर्म धुरी।
मंगलमय मुनि साधु नमो, करके नमोस्तु गुणी बनो॥

ॐ ह्रीं साधु-मंगलाय अर्घ्यं...॥ ८॥

धर्म केवली-प्रणीत जो, वत्थु-सहावो-धर्म भजो।
अंतिम मंगल नमो-नमो, करके नमोस्तु स्वस्थ बनो॥

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्म-मंगलाय अर्घ्यं...॥ ९॥

उत्तम में सर्वोत्तम जो, हरते सभी अनुत्तम वो।
लोकोत्तम अर्हंत नमो, करके नमोस्तु श्रेष्ठ बनो॥

ॐ ह्रीं अर्हत्-लोकोत्तमाय अर्घ्यं...॥ १०॥

लोक शिखर के जो वासी, हम सब भी हैं प्रत्याशी।
लोकोत्तम प्रभु सिद्ध नमो, करके नमोस्तु सिद्ध बनो॥

ॐ ह्रीं सिद्ध-लोकोत्तमाय अर्घ्यं...॥ ११॥

मुद्रा धरें दिगंबर जो, चलते मुक्ति स्वयंवर को।
अंतिम उत्तम साधु नमो, करके नमोस्तु शांत बनो॥

ॐ ह्रीं साधु-लोकोत्तमाय अर्घ्यं...॥ १२॥

धर्म केवली-प्रणीत जो, चारित्तं खलु धम्मो वो।
लोकोत्तम जिन धर्म नमो, करके नमोस्तु धर्मि बनो॥

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्म-लोकोत्तमाय अर्घ्यं...॥ १३॥

शरणों के हैं शरणा जो, हरें हमारी भ्रमणा वो।
प्रथम शरण अर्हंत नमो, करके नमोस्तु शिष्य बनो॥

ॐ ह्रीं अर्हत्-शरणाय अर्घ्यं...॥ १४॥

नंत गुणी शुद्धातम जो, साँची शरण वही समझो।
सिद्धालय के सिद्ध नमो, करके नमोस्तु भक्त बनो॥

ॐ ह्रीं सिद्ध-शरणाय अर्घ्यं...॥ १५॥

सर्व साधु पाठक आचार्य, यथाजात गुरु तारण हार।
सत्य शरण मुनि साधु नमो, करके नमोस्तु संत बनो॥

ॐ ह्रीं साधु-शरणाय अर्घ्यं...॥ १६॥

'धम्मो दया विसुद्धो' जो, शरण सहायी हमको हो।
अंतिम शरणा धर्म नमो, करके नमोस्तु शिष्ट बनो॥

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्म-शरणाय अर्घ्यं...॥ १७॥

पूर्णार्घ्य (सोरठा)

पंच परम परमेष्ट, मंगल उत्तम हैं शरण।
पर्व प्रतिष्ठा श्रेष्ठ, करने पड़ते हम चरण॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्बप्रतिष्ठोत्सवे यागमण्डले-अर्हत्परमेष्ठिप्रभृति-धर्मशरणांत प्रथम-वलयस्थित-सप्तदश-जिनाधीशयागदेवेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

द्वितीय अर्घ्यावली

भूतकालीन चौबीसी

(दोहा)

सिखा गए निर्वाह जो, करके निज निर्माण।
नमो भूतकालिक प्रभो, तीर्थंकर निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाण-जिनाय अर्घ्यं...॥ १॥

सागर सम खारे नहीं, सागर सम गंभीर।
नमो भूतकालिक प्रभो, जिनसागर भव तीर॥

ॐ ह्रीं श्री सागर-जिनाय अर्घ्यं...॥ २॥

महा-स्वादु संसार है, महासाधु जिनराज।
नमो भूतकालिक प्रभो, दो आतम का स्वाद॥

ॐ ह्रीं श्री महासाधु-जिनाय अर्घ्यं...॥ ३॥

द्रव्य-भाव-नोकर्म रज, हरो करो स्वाधीन।
नमो भूतकालिक प्रभो, विमल कमल आसीन॥

ॐ ह्रीं श्री विमलप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥ ४॥

जड़-रत्नों को तज करें, रत्नत्रय का लाभ।
नमो भूतकालिक प्रभो, परम पूज्य शुद्धाभ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धाभ-जिनाय अर्घ्यं...॥ ५॥

क्षणिक जगत-लक्ष्मी रही, त्यागा उसका साथ।
नमो भूतकालिक प्रभो, जिनवर श्रीधरनाथ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीधर-जिनाय अर्घ्यं...॥ ६॥

लोभ पाप का बाप तज, दें निज का वरदान।
नमो भूतकालिक प्रभो, श्री श्रीदत्त महान॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीदत्त-जिनाय अर्घ्यं...॥ ७॥

आभामण्डल देखकर, नभ-मण्डल शरमाय।
नमो भूतकालिक प्रभो, श्री सिद्धाभ जिनाय॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धाभ-जिनाय अर्घ्यं...॥ ८॥

कमल अमल ज्यों कीच में, सो पाए सम्मान।
नमो भूतकालिक प्रभो, अमलनाथ भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्री अमलप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥ ९॥

उद्धर निज उद्धार कर, किए मुक्ति की खोज।
नमो भूतकालिक प्रभो, हमें साथ दो रोज॥

ॐ ह्रीं श्री उद्धारदेव-जिनाय अर्घ्यं...॥ १०॥

ध्यान-अग्नि से जल गए, जिनके कर्म अनंत।
नमो भूतकालिक प्रभो, अग्नि देव भगवंत॥

ॐ ह्रीं श्री अग्निदेव-जिनाय अर्घ्यं...॥ ११॥

संयम जग के राज्य दें, संयम सुख साम्राज्य।
नमो भूतकालिक प्रभो, श्री संयम जिनराज॥

ॐ ह्रीं श्री संयम-जिनाय अर्घ्यं...॥ १२॥

शिवस्वरूप सुंदर रहा, सत्य सौख्य जगनाथ।
नमो भूतकालिक प्रभो, परम पूज्य शिवनाथ॥

ॐ ह्रीं श्री शिव-जिनाय अर्घ्यं...॥ १३॥

काम-पुष्प को जीत जो, महक रहे स्वयमेव।
नमो भूतकालिक प्रभो, पुष्पाञ्जलि जिनदेव॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पाञ्जलि-जिनाय अर्घ्यं...॥ १४॥

होता क्या उत्साह बिन, सफल करे उत्साह।
नमो भूतकालिक प्रभो, परम पूज्य उत्साह॥

ॐ ह्रीं श्री उत्साह-जिनाय अर्घ्यं...॥ १५॥

निज-सम परमेश्वर करें, हरें पतन के पाथ।
नमो भूतकालिक प्रभो, परमेश्वर जिननाथ॥

ॐ ह्रीं श्री परमेश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥ १६॥

ज्ञान-चेतना पा हरें, हम सबका अज्ञान।
नमो भूतकालिक प्रभो, ज्ञानेश्वर भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानेश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥ १७॥

कर्म-मैल धो ज्यों खिले, चमके आत्म-प्रदेश।
नमो भूतकालिक प्रभो, विमलेश्वर तीर्थेश॥

ॐ ह्रीं श्री विमलेश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥ १८॥

सम्यक्-चारित ज्यों धरे, यश फैले दिन-रात।
नमो भूतकालिक प्रभो, पूज्य यशोधरनाथ॥

ॐ ह्रीं श्री यशोधर-जिनाय अर्घ्यं...॥ १९॥

कृष्ण कषाएँ कृश किए, नाम हुआ विख्यात।
नमो भूतकालिक प्रभो, पूज्य कृष्णमति-नाथ॥

ॐ ह्रीं श्री कृष्णमति-जिनाय अर्घ्यं...॥ २०॥

ज्ञान-शरीरी हो गए, बाँटो केवलज्ञान।
नमो भूतकालिक प्रभो, ज्ञानमती भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमति-जिनाय अर्घ्यं...॥ २१॥

भाव शुभाशुभ हर चुके, हुए शुद्ध स्वयमेव।
नमो भूतकालिक प्रभो, पूज्य शुद्धमति देव॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धमति-जिनाय अर्घ्यं...॥ २२॥

निज-पर के कल्याण कर, जगतपूज्य पद पाए।
नमो भूतकालिक प्रभो, पूज्य भद्र जिनराय॥

ॐ ह्रीं श्री श्री भद्र-जिनाय अर्घ्यं...॥ २३॥

अन्तराय हर खोलते, सबको मोक्ष कपाट।
नमो भूतकालिक प्रभो, अनंतवीर्य सम्राट॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्य-जिनाय अर्घ्यं...॥ २४॥

पूर्णार्घ्य

भूतकाल के भरत के, तीर्थंकर चौबीस।
पर्व प्रतिष्ठा कार्य को, हो नमोस्तु नत शीश॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्बप्रतिष्ठामहोत्सवे-यागमण्डले-द्वितीय-वलयोन्मुद्रित निर्वाणाद्य-अनंतवीर्यान्तेभ्यो भूतकालसंबंधी-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

तृतीय अर्घ्यावली

वर्तमान चौबीसी (चौपाई)

धर्म-ध्वजा पहले फहराई, फिर अपनी आतम झलकायी।
मोक्षपंथ दे मोक्ष पधारे, आदिप्रभु को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ १॥

अंतस-बाह्य शत्रु को जीते, आतम का ज्ञानामृत पीते।
सबके प्यारे भक्त सहारे, अजितप्रभु को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ २॥

जिसे असंभव दुनियाँ कहती, उसमें जिनकी आतम रमती।
संभव करते कार्य हमारे, शंभवप्रभु को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री शंभवनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ ३॥

बंदर चिह्न दिगंबर रूपा, बन बैठे चिन्मय चिद्रूपा।
अभिनन्दन अपना स्वीकारें, अभिनन्दन प्रभु नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ ४॥

सुमति प्राप्त कर स्व-गति सुधारी, तभी जगत की दुर्गति हारी।
मिले सुमति हम हुए तुम्हारे, सुमितनाथ को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ ५॥

यों रहते ज्ञानी ज्ञानी में, जैसे कमल रहे पानी में।
दे दो अब तो नाथ किनारे, पद्मप्रभु को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥ ६॥

तन-मन-मंदिर चेतन सुंदर, बुला रहे मंदिर के अंदर।
कहते तू अपने में आ रे, सुपार्श्वप्रभु को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ ७॥

नाम-धाम-तन चंदा जैसे, उनको कौन भुलाए कैसे।
कहते चेतन को चमका रे, चंद्रप्रभु को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥ ८॥

खिले पुष्प सम जग शूलों में, उलझो ना जग की भूलों में।
मोक्षमार्ग की सुविधि सुधारे, सुविधिनाथ को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ ९॥

शीतल चंदन बर्फ न पानी, शीतल जिनशासन के ज्ञानी।
मिले ज्ञान हम आए द्वारे, शीतलप्रभु को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ १०॥

पाप-अमंगल-संकट-हर्त्ता, मंगलमय श्रेयस सुख-कर्त्ता।
सिद्धालय के दिए इशारे, श्रेयांसप्रभु को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ ११॥

सब कल्याणक हुए जहाँ पर, हम पूजें तीरथ चम्पापुर।
तजें पंचपरिवर्तन सारे, वासुपूज्य को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य-जिनाय अर्घ्यं...॥ १२॥

कृतवर्मा श्यामा के लाला, जिन्हें मुक्ति पहनाए माला।
कर्म हरे चेतन श्रृंगारे, विमलनाथ को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ १३॥

अनंतदुख अनुबंध मिटाया, अनंत आतम का धन पाया।
अनंत जन के भाग्य सँभारे, अनंतप्रभु को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ १४॥

धर्म ध्वजा रत्नत्रय धारी, अतः मोक्ष के हो अधिकारी।
धर्म दिखा दो आत्म नजारे, धर्मनाथ को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ १५॥

कुरुवंशी ऐरा सुत साँचे, जिनकी पत्री दुनियाँ वाँचे।
शांति बिना अब शांति कहाँ रे, शांतिनाथ को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ १६॥

सब पर करुणाधार बहायी, शुद्ध चेतना सो झलकायी।
अतः गूँजते जय-जयकारे, कुंथुनाथ को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ १७॥

आकुलता के कष्ट मिटा के, सभी तरह के चक्र चला के।
तीन-तीन पदवी को धारे, अरहनाथ को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ १८॥

जिन्हें मुक्ति की नारी भायी, बने उन्हीं के हम अनुयायी।
मोहमहल जो करें किनारे, मल्लिनाथ को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ १९॥

जिसको खुद को सिद्ध बनाना, मुनिसुव्रत को शीश झुकाना।
सुव्रत सु-व्रत दे जग तारे, सुव्रतप्रभु को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ २०॥

तीर्थंकर ज्यों दिए अहिंसा, हारी राग-द्वेष की हिंसा।
समवसरण चेतन सा धारे, नमीनाथ को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ २१॥

राज रमा राजुल ज्यों त्यागी, आत्म स्वयंवर की लौ लागी।
भक्त बनें बाराती सारे, नेमिनाथ को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ २२॥

निज का किला ध्यान सेना से, कर्म कमठ रिपु को जो नाशे।
हरते प्रभु उपसर्ग हमारे, पार्श्वनाथ को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ २३॥

वर्द्धमान सन्मति अतिवीरा, महावीर जय शासन वीरा।
हम पूजें दो आन सहारे, महावीर को नमन हमारे॥

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान-जिनाय अर्घ्यं...॥ २४॥

पूर्णार्घ्य (दोहा)

वर्तमान के भरत के, तीर्थंकर चौबीस।
पर्व प्रतिष्ठा कार्य को, हो नमोऽस्तु नत शीश॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्बप्रतिष्ठोत्सवे-यागमण्डले-तृतीय-वलयोन्मुद्रित-वृषभादि-वीर्यान्तेभ्यो-वर्तमानसंबंधी-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चतुर्थ अर्घ्यावली

भाविकाल चौबीसी

(अर्द्ध विष्णु)

श्रेणिक राजा महापद्म प्रभु, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री महापद्म-जिनाय अर्घ्यं...॥ १॥

सुर नर पूजेंगे जब सुरप्रभ, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री सुरप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥ २॥

जड़ चेतन चमकें जब सुप्रभ, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री सुप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥ ३॥

स्वयं स्वयंप्रभ मिल जाएँ जब, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥ ४॥

पाप नशेंगे जब सर्वायुध, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वायुध-जिनाय अर्घ्यं...॥ ५॥

विजय मिले जयदेवनाथ जब, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री जयदेव-जिनाय अर्घ्यं...॥ ६॥

मोह मिटे जब पूज्य उदयप्रभ, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री उदयप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥ ७॥

ज्ञानोदय हो प्रभादेव जब, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभादेव-जिनाय अर्घ्यं...॥ ८॥

जग निशंक हो जब उदंकप्रभु, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री उदंकदेव-जिनाय अर्घ्यं...॥ ९॥

प्रश्न न होंगे प्रश्नकीर्ति जब, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री प्रश्नकीर्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥ १०॥

कर्मजयी जयकीर्ति बनें जब, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री जयकीर्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥ ११॥

आत्मशुद्धि कर पूर्ण-बुद्धि प्रभु, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री पूर्णबुद्धि-जिनाय अर्घ्यं...॥ १२॥

कषाय हर निःकषाय हों जब, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री निःकषाय-जिनाय अर्घ्यं...॥ १३॥

जड़ का मैल विमलप्रभ धोकर, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री विमलप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥ १४॥

दुख बाहुल्य बहुलप्रभ तजकर, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री बहुलप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥ १५॥

निर्मल आतम निर्मलप्रभु पा, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री निर्मल-जिनाय अर्घ्यं...॥ १६॥

चित्रगुप्ति मिथ्यात्व मुक्ति पा, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री चित्रगुप्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥ १७॥

मुक्ति समाधिगुप्ति वरें जब, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री समाधिगुप्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥ १८॥

वरें स्वयंभू निज रमणी जब, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंभू-जिनाय अर्घ्यं...॥ १९॥

दर्प-सर्प-कंदर्पनाथ हर, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री कंदर्प-जिनाय अर्घ्यं...॥ २०॥

जय-जयनाथ परम गुरु हों जब, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री जयनाथ-जिनाय अर्घ्यं...॥ २१॥

पूज्य विमलजिन निज-मल हरने, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री विमल-जिनाय अर्घ्यं...॥ २२॥

दिव्यवाद आत्मज्ञ बनें जब, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री दिव्यवाद-जिनाय अर्घ्यं...॥ २३॥

सिद्धि अनंतवीर्य पाने को, होंगे तीर्थंकर।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु कर॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्य-जिनाय अर्घ्यं...॥ २४॥

पूर्णार्घ्य

भाविकाल के भरत के, तीर्थंकर चौबीस।
पर्व प्रतिष्ठा कार्य को, हो नमोस्तु नत शीश॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्बप्रतिष्ठोत्सवे-यागमण्डले-चतुर्थ-वलयोन्मुद्रित-महापद्मादि-अनंतवीर्यान्तेभ्यो भविष्यसंबंधी-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

पंचम अर्घ्यावली

विदेह क्षेत्रस्थ विद्यमान बीस तीर्थंकर

(चौपाई)

सीमंधर प्रभु श्री मन-धर के, आतमधन पाए भव तर के।
सुख-संपत्ति मिले अविनाशी, हम तो नमोस्तु के अभिलाषी॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर-जिनाय अर्घ्यं...॥ १॥

युगमंधर स्वामी युग-मन धर, युगपत् जानें देखें निज-पर।
अंतरंग-बहिरंग गुणी हों, सो नमोस्तु कर भक्त धनी हों॥

ॐ ह्रीं श्री युगमंधर-जिनाय अर्घ्यं...॥ २॥

बाहु बाहु निज-पौरुष-बल से, दूर हुए जग के दल-दल से।
दल-दल तजने पौरुष पाएँ, सो नमोस्तु करके गुण गाएँ॥
ॐ ह्रीं श्री बाहु-जिनाय अर्घ्यं...॥ ३॥

जय अरिहंत सुबाहु सुभावी, तजे विभावी बने स्वभावी।
हम अभिमान व्यर्थ का छोड़ें, सो नमोस्तु करने सिर मोड़ें॥
ॐ ह्रीं श्री सुबाहु-जिनाय अर्घ्यं...॥ ४॥

यथाजात प्रभु सुजात स्वामी, यथाख्यात चेतन के धामी।
बालक सम अविकारी हम हों, सो नमोस्तु कर शुद्धातम हों॥
ॐ ह्रीं श्री सुजात-जिनाय अर्घ्यं...॥ ५॥

पूज्य स्वयंप्रभ बने स्वयंभू, जिससे गूँजे जग अम्बर भू।
स्वयं प्रतिष्ठित जल्दी हम हों, सो नमोस्तु कर समकित हम हों॥
ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥ ६॥

धर्म ध्वजा थामें ऋषभानन, हुए धर्ममय भक्त रु भगवन।
तजें अधर्म ज्ञानगुण पाएँ, सो नमोस्तु कर शीश झुकाएँ॥
ॐ ह्रीं श्री ऋषभानन-जिनाय अर्घ्यं...॥ ७॥

अनन्तवीर्य शक्ति प्रकटा के, मोहजाल तोड़े अकुला के।
बंध हरण को चरित शक्ति दो, सो नमोस्तु कर प्रभु भक्ति हो॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तवीर्य-जिनाय अर्घ्यं...॥ ८॥

परमपूज्य सौरीप्रभ सुखिया, समवसरण के सुन्दर मुखिया।
त्यागें दुख, दुख के कारण हम, सो नमोस्तु को पड़ें चरण हम॥
ॐ ह्रीं श्री सौरिप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥ ९॥

विशालकीर्ति का यश जब फैला, जो हर लेता तत्त्व विषैला।
हम बन जाएँ प्रभु के चेले, सो नमोस्तु को लगते मेले॥
ॐ ह्रीं श्री विशालकीर्ति-जिनाय अर्घ्यं...॥ १०॥

पूज्य वज्रधर वज्र सरीखे, जिनसे वज्र कठिनता सीखे।
हम तो दया सीखने आए, सो नमोस्तु करने ललचाए॥
ॐ ह्रीं श्री वज्रधर-जिनाय अर्घ्यं...॥ ११॥

चन्द्रानन चंदा से सुन्दर, फिर भी रखें न वस्त्राडम्बर।
चंदा-तारे करें अर्चना, सो नमोस्तु कर करें वंदना॥
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रानन-जिनाय अर्घ्यं...॥ १२॥

चन्द्रबाहु प्रभु चाँद चकोरे, पूर्ण दिगम्बर गोरे-गोरे।
पाप-पुण्य दुनियाँ के त्यागी, सो नमोस्तु के हम अनुरागी॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रबाहु-जिनाय अर्घ्यं...॥ १३॥

भोग-भुजंग का जहर उतारे, अतः भुजंग नाम प्रभु धारे।
हम चिद्रूप बनें भगवन्ता, सो नमोस्तु हैं नन्तानन्ता॥

ॐ ह्रीं श्री भुजंग-जिनाय अर्घ्यं...॥ १४॥

ईश्वर निज में जो प्रकटाए, जगत्-पूज्य ईश्वर कहलाए।
हम मिथ्यात्व हरें व्रत पालें, सो नमोस्तु कर हम गुण गा लें॥

ॐ ह्रीं श्री ईश्वर-जिनाय अर्घ्यं...॥ १५॥

धर्मधुरी जो तत्त्व विचारें, वही नेमिप्रभ सबको तारें।
ग्रंथ हरें निर्ग्रंथ बनें हम, सो नमोस्तु कर भजन करें हम॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिप्रभ-जिनाय अर्घ्यं...॥ १६॥

वीरसेन प्रभु वीरसिंह हैं, भवसागर के तीरसिंह हैं।
हमको भव से पार उतारें, सो नमोस्तु भगवन् स्वीकारें॥

ॐ ह्रीं श्री वीरसेन-जिनाय अर्घ्यं...॥ १७॥

महाभद्र जो सभ्य सभी से, भक्त नाम सुन झुके तभी से।
संयम अंगीकार करें हम, सो नमोस्तु कर भद्र बनें हम॥

ॐ ह्रीं श्री महाभद्र-जिनाय अर्घ्यं...॥ १८॥

पूज्य देवयश निज यश बाँटें, कर्म कालिमा सबकी छाँटें।
हम यशवान बनें ओजस्वी, सो नमोस्तु कर बनें यशस्वी॥

ॐ ह्रीं श्री देवयश-जिनाय अर्घ्यं...॥ १९॥

अजितवीर्य प्रभु अजित विश्व में, अजितवीर्य हम बनें भविष्य में।
शुद्ध-विशुद्ध भावना करना, सो नमोस्तु कर भव से तरना॥

ॐ ह्रीं श्री अजितवीर्य-जिनाय अर्घ्यं...॥ २०॥

पूर्णार्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेह क्षेत्र के बीस।
पर्व प्रतिष्ठा कार्य को, हो नमोस्तु नत शीश॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्बप्रतिष्ठोत्सवेयागमण्डले-पंचम-वलयोन्मुद्रित विदेहक्षेत्रेषु-षष्ठिसहितैकशत-तीर्थंकरसंयुक्त-नित्यविहरमाण-विंशत-तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

षष्टम अर्घ्यावली

श्री आचार्य परमेष्ठी के ३६ मूलगुण

पंचाचार (हाकलिका)

अष्टांगी निर्दोष रहा, दर्श दर्शनाचार कहा।
वह पालन आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं दर्शनाचार-गुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १॥

अष्टांगी भव से तारे, ज्ञानाचार तत्त्व धारे।
वह पालन आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं ज्ञानाचार-गुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २॥

तेरह विध चारित्र अमल, वो चारित्राचार कमल।
वह पालन आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं चारित्राचार-गुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ३॥

बारह विध निर्दोष धरें, तपाचार अरिहन्त कहें।
वह पालन आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं तपाचार-गुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ४॥

जो परिषह उपसर्ग सहें, प्रभु वह वीर्याचार कहें।
वह पालन आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं वीर्याचार-गुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ५॥

बारह तप

चउ-विध का भोजन तजके, करें तपस्या तप करके।
अनशन तप आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं अनशन-तपोगुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ६॥

निजी-भूख से कम खाना, ऊनोदर यह तप माना।
ऐसा तप आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं अवमौदर्य-तपोगुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ७॥

विधि से भोजन या अनशन, वृत्तिपरिसंख्यान वचन।
सम्यक् तप आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं वृत्तिपरिसंख्यान-तपोगुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥८॥

षट्-रस त्याग करें भोजन, रसपरित्याग कहें भगवन्।
उत्तम तप आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं रसपरित्याग-तपोगुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥९॥

निर्जन में रहना सोना, विविक्तशैय्यासन माना।
साँचा तप आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं विविक्तशैय्यासन-तपोगुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१०॥

तप से तन को दिए सजा, चेतन बगिया लिए सजा।
कायक्लेश आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं कायक्लेश-तपोगुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥११॥

दोष व्रतों में गर आएँ, निन्दा-गर्हा करवाएँ।
प्रायश्चित्त आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं प्रायश्चित्त-तपोगुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१२॥

पूज्य जनों का चार तरा, आदर करना विनय कहा।
श्रेष्ठ विनय आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं विनय-तपोगुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १३॥

संत-त्यागियों की सेवा, मोक्षमार्ग का तप मेवा।
वैयावृत्त आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं वैयावृत्त-तपोगुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १४॥

आलस तज अध्याय पढ़ें, पाँच तरह स्वाध्याय करें।
स्वाध्याय तप आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं स्वाध्याय-तपोगुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १५॥

तन से पूर्ण ममत्व तजें, परमातम का तत्त्व भजें।
तप व्युत्सर्ग आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं व्युत्सर्ग-तपोगुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १६॥

एक तत्त्व में चित्त धरें, तप का उपसंहार करें।
शुद्ध ध्यान आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं ध्यान-तपोगुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १७॥

दसलक्षण धर्म

कटु वाणी उपसर्ग सहें, निज में उत्तम क्षमा धरें।
क्रोध त्याग आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं उत्तमक्षमा-धर्मधुरन्धर-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १८॥

ज्ञानादिक मद त्याग करें, उत्तम मार्दव धर्म धरें।
मान त्याग आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं उत्तममार्दव-धर्मधुरन्धर-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १९॥

कथनी-करनी एक करें, उत्तम आर्जव धर्म धरें।
कपट त्याग आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं उत्तमार्जव-धर्मधुरन्धर-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २०॥

लोभ पाप का बाप रहा, शौच धर्म वह घात रहा।
लोभ त्याग आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं उत्तमशौच-धर्मधुरन्धर-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २१॥

सत्य धर्म की कल्याणी, हित-मित-प्रिय बोलें वाणी।
सत्य कथन आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं उत्तमसत्य-धर्मधुरन्धर-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २२॥

इन्द्रिय जीव सुरक्षा को, चरणाचरण व्यवस्था को।
शुभ संयम आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं उत्तमसंयम-धर्मधुरन्धर-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २३॥

इच्छा पूर्ण निरोध करें, कर्म निर्जरा शोध करें।
उत्तम तप आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं उत्तमतप-धर्मधुरन्धर-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २४॥

दोनों परिग्रह त्याग करें, नग्न हुए वैराग्य धरें।
श्रेष्ठ त्याग आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं उत्तमत्याग-धर्मधुरन्धर-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २५॥

पर का कुछ ना अपना हो, अपना कुछ ना पर का हो।
आकिंचन आचार्य धरें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं उत्तमआकिंचन-धर्मधुरन्धर-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २६॥

ब्रह्मचर्य व्रतराज रहा, ब्रह्मरमण साम्राज्य कहा।
ब्रह्मचर्य आचार्य धरें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं उत्तमब्रह्मचर्य-धर्मधुरन्धर-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २७॥

षट्-आवश्यक

समता धरें सदा मन से, सुख-दुख आदिक के क्षण में।
सामायिक आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं सामायिक-गुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २८॥

इक जिनवर के गुण गाना, उसे वन्दना पहचाना।
आवश्यक आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं वन्दना-गुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २९॥

चौबीसों प्रभु की गाथा, कहना झुका-झुका माथा।
वो स्तवन आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं स्तवन-गुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ३०॥

भूतकाल जो दोष हुए, प्रतिक्रमण से दूर हुए।
वही शुद्ध आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं प्रतिक्रमण-गुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ३१॥

दोष हो सकें आगे जो, उन्हें पूर्व ही त्यागे जो।
प्रत्याख्यान आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं प्रत्याख्यान-गुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ३२॥

तन ममता तज निज-ध्यानी, कायोत्सर्ग करें स्वामी।
आवश्यक आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं कायोत्सर्ग-गुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ३३॥

तीन गुप्तियाँ

मन विकल्प रोकें सारे, मनोगुप्ति गुरुवर धारे।
निज रक्षा आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं मनोगुप्ति-गुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ३४॥

सभी वचन तज मौन धरें, वचनगुप्ति संग्राम हरें।
स्व-पर दया आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं वचनगुप्ति-गुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ३५॥

तन व्यापार तजें सारे, कायगुप्ति मुद्रा धारे।
निज को जिन आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें ॥

ॐ ह्रूं कायगुप्ति-गुणसुशोभित-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ३६॥

पूर्णार्घ्य

(दोहा)

जिन-पथ गुरु आचार्य दें, गुण धारें छत्तीस।
पर्व प्रतिष्ठा कार्य को, हो नमोस्तु नत शीश॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्बप्रतिष्ठोत्सवे-यागमण्डले-षष्ठवलयोन्मुद्रित-षट्त्रिंश-गुणसहित-आचार्य-परमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

सप्तम अर्घ्यावली

श्री उपाध्याय परमेष्ठी के २५ मूलगुण

(दोहा)

पहला आचारांग दे, मुनि श्रावक-आचार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं अष्टादशसहस्रपदसहित-आचारांगधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१॥

दूजा सूत्रकृतांग दे, धर्म क्रिया व्यवहार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशत्सहस्रपदसहित-सूत्रकृतांगधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥२॥

तीसरा स्थानांग जो, कहे जीव घर वार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं द्विचत्वारिंशत्सहस्रपदसहित-स्थानांगधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ३॥

चौथा समवायांग जो, सम ही सभी विचार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं एकलक्षचतुःषष्ठिसहस्रपदसहित-समवायांगधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ४॥

व्याख्या प्रज्ञप्ति कहे, अस्ति नास्ति चितधार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं द्विलक्षाष्टविंशतिसहस्रपदसहित-व्याख्याप्रज्ञप्त्यंगधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ५॥

ज्ञातृकथा का अंग दे, पुरुष शलाका सार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं पंचलक्षषट्पंचाशत्सहस्रपदसहित-ज्ञातृधर्मकथांगधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ६॥

उपासकाध्ययनांग दे, गृहि प्रतिमा संस्कार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं एकादशलक्षसप्ततिसहस्रपदसहित-उपासकाध्यनांगधारक-उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ७॥

अष्टम अन्तकृतांग दे, दसो अंतकृत तार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं त्रयोविंशतिलक्षाष्टविंशतिसहस्रपदसहित-अंतःकृतदशांगधारक-उपाध्याय-परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ८॥

अनुत्तरदशांग में मुनि, दस-दस स्वर्ग सिधार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रौं द्विनवतिलक्षचतुर्चत्वारिंशत्सहस्रपदसहित-अनुत्तरोपपादिकांगधारक-उपाध्याय-परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ९॥

अंग प्रश्नव्याकरण दे, निमित्तज्ञान विस्तार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रौं त्रिनवतिलक्षषोडशसहस्रपदसहित-प्रश्नव्याकरणांगधारक-उपाध्याय-परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १०॥

जो विपाकसूत्रांग दे, सभी कर्म फलभार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रौं एककोटिचतुरशीतिलक्षपदसहित-विपाकसूत्रांगधारक-उपाध्याय-परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ११॥

जन्म-ध्रौव्य-व्यय वस्तु के, कहे पूर्व-उत्पाद।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रौं उत्पाद-पूर्वधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १२॥

कहे पूर्व अग्रायणी, नय-दुर्नय भावार्थ।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रौं अग्रायणीय-पूर्वधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १३॥

वीर्यानुवाद-पूर्व जो, कहे वीर्य उपकार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रौं वीर्यानुवाद-पूर्वधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १४॥

अस्तिनास्ति-पूर्व दे, अस्तिनास्ति संसार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रौं अस्तिनास्तिप्रवाद-पूर्वधारक-उपाध्यायपरमेष्ठभ्यो अर्घ्यं...॥ १५॥

ज्ञानप्रवाद-पूर्व कहे, सकल ज्ञान भण्डार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रौं ज्ञानप्रवाद-पूर्वधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १६॥

सत्यप्रवाद-पूर्व कहे, गुप्ति-समिति सत्कार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रौं सत्यप्रवाद-पूर्वधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १७॥

आत्मप्रवाद-पूर्व कहे, नय निश्चय व्यवहार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं आत्मप्रवाद-पूर्वधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १८॥

कर्मप्रवाद-पूर्व कहे, कर्मों का विस्तार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं कर्मप्रवाद-पूर्वधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १९॥

प्रत्याख्यान-पूर्व कहे, किस विध अघ परिहार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान-पूर्वधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २०॥

विद्यानुवाद-पूर्व दे, विद्यामंत्र प्रसार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं विद्यानुवाद-पूर्वधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २१॥

कल्याणवाद-पूर्व दे, जिन कल्याण प्रचार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं कल्याणवाद-पूर्वधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २२॥

प्राणानुवाद-पूर्व दे, तन्त्र-कुमन्त्र निवार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं प्राणप्रवाद-पूर्वधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २३॥

क्रियाविशाल-पूर्व कहे, चौसठ कलाधिकार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं क्रियाविशाल-पूर्वधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २४॥

त्रिलोकबिंदु-पूर्व कहे, लोक मोक्ष सरकार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यबिंदु-पूर्वधारक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २५॥

पूर्णार्घ्य

उपाध्याय मुनि पूज्य हैं, गुण धारें पच्चीस।
पर्व प्रतिष्ठा कार्य को, हो नमोस्तु नत शीश॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्बप्रतिष्ठोत्सवे-यागमण्डले-सप्तमवलयोन्मुद्रित द्वादशांग-श्रुतदेवताभ्यस्तद्-आराधक-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

अष्टम अर्घ्यावली

श्री साधु परमेष्ठी के २८ मूलगुण

पंच महाव्रत

(सखी)

सब हिंसा पाप निवारी, अहिंसा-महाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः अहिंसामहाव्रतधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १॥

सब झूठ पाप संहारी, मुनि सत्य-महाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः सत्यमहाव्रतधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २॥

सब चोरी पाप निवारी, जो अचौर्य-महाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः अचौर्यमहाव्रतधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ३॥

निज रसिया त्यागे नारी, ब्रह्मचर्य-महाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः ब्रह्मचर्यमहाव्रतधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ४॥

जो परिग्रह-मूर्च्छा-हारी, अपरिग्रह-महाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः अपरिग्रहमहाव्रतधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ५॥

पंच समितियाँ

मुनि निरख-निरख कर चालें, मुनि ईर्या-समिति पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः ईर्यासमितिधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ६॥

मुख व्यर्थ न अपना खोलें, मुनि भाषा-समिति पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः भाषासमितिधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ७॥

रसपान शुद्ध कुछ करलें, सो एषणा-समिति पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः एषणासमितिधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ८॥

लें वस्तु देख या धर लें, आदाननिक्षेपण पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः आदाननिक्षेपणसमितिधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ९॥

मल-मूत्र विधिवत् तज लें, व्युत्सर्ग-समिति जो पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्रः व्युत्सर्गसमितिधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १०॥

पंचेन्द्रिय-विजय

स्पर्शन आठविध जीतें, शुद्धातम छूना सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः स्पर्शनेन्द्रियविषय विजेता-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ ११॥

रस पाँच तरह के जीतें, परमात्मा चखना सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः रसनेन्द्रिय विषय विजेता-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १२॥

दुर्गन्ध सुगन्धी जीतें, चारित्र सूँघना सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः घ्राणेन्द्रियविषयविजेता-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १३॥

पचरंगा दर्शन जीतें, निज सम्यग्दर्शन सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः चक्षुरिन्द्रियविषयविजेता-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १४॥

स्वर सात तरह के जीतें, संगीत आत्म का सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः कर्णेन्द्रियविषयविजेता-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १५॥

षट्-आवश्यक

जो सब में समता धारें, निज शुद्ध स्वरूप विचारें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः सामायिक-आवश्यकगुणधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१६॥

गुण एक प्रभु के गाएँ, थुति करके पुण्य बढ़ाएँ।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः स्तुति-आवश्यकगुणधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १७॥

गुण चौबीसों के गाना, मुनि करें वंदना नाना।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्ः वंदना-आवश्यकगुणधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ १८॥

पिछले दोषों को हरते, सो प्रतिक्रमण मुनि करते।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्ः प्रतिक्रमण-आवश्यकगुणधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥१९॥

अगले दोषों को हर लें, सो प्रत्याख्यान नियम लें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्ः प्रत्याख्यानआवश्यकगुणधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥२०॥

निज तन से मोह नशाएँ, जो कायोत्सर्ग रचाएँ।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्ः कायोत्सर्ग-आवश्यकगुणधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥२१॥

सात अन्य गुण

कुछ निशि में तृण पर सोना, या भू पर त्याग बिछौना।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्ः भूशयनमूलगुणधारकश्री साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २२॥

नहिं मुनिजन कभी नहाते, शृंगार करें न कराते।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्ः अस्नानमूलगुणधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २३॥

मुनि नग्न-दिगम्बर रहते, उपसर्ग-परीषह सहते।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्ः नग्नत्वमूलगुणधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २४॥

दातून करें न मंजन, मुनि धरते अदंतधावन।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्ः अदन्तधावनमूलगुणधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २५॥

इक बार करें मुनि भोजन, दिन में विधिवत् कर शोधन।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥

ॐ ह्ः एकभुक्तिमूलगुणधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २६॥

मुनि मौन खड़े हो खाएँ, आसक्ति दोष नशाएँ।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः एकाशनमूलगुणधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २७॥

मुनि बाल सजाना तजते, केशलौंच दयालु करते।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना ॥

ॐ ह्रः केशलौंचमूलगुणधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...॥ २८॥

पूर्णार्घ्य (दोहा)

धर्मध्वजा मुनि साधु जो, गुणधर अट्ठाबीस।
पर्व प्रतिष्ठा कार्य को, हो नमोस्तु नत शीश॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्बप्रतिष्ठोत्सवे-यागमण्डले-अष्टमवलयोन्मुद्रित-अष्टाविंशति-गुणसहित सर्वसाधुपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

नवम अर्घ्यावली

अड़तालीस ऋद्धि

(अर्द्ध जोगीरासा)

लोकालोक प्रकाशी आतम, केवलज्ञानी आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं सकललोकालोक-प्रकाशकेभ्यो अर्घ्यं...॥ १॥

सरल कुटिल मन विषय गहे मन-, पर्यय ज्ञानी आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं ऋजुमति-विपुलमतिमनःपर्ययज्ञान-धारकेभ्यो अर्घ्यं...॥ २॥

इंद्रिय मन बिन रूपी जाने, अवधिज्ञान त्रय आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अवधिज्ञान-धारकेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३॥

कोठे में ज्यों अन्न भिन्न त्यों, कोष्ठबुद्धि हो आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं कोष्ठबुद्धि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४॥

बीज वृक्ष की परम्परा ज्यों, बीजबुद्धि हो आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं बीजबुद्धि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५॥

गुरु से इक पद पा सब समझें, पदानुसारी आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं पादानुसारीबुद्धि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ६॥

सैन्य शब्द भी पृथक सुने ज्यों, संभिन्नश्रोतृ आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं संभिन्नश्रोतृत्वबुद्धि--ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ७॥

रवि शशि गिरि को छुएँ यहीं से, दूरस्पर्शी आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दूरस्पर्शत्वबुद्धि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ८॥

रसना के भी बाहर चख लें, दूरास्वादन आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दूरस्वादित्वबुद्धि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ९॥

घ्राण विषय के बाहर सूँघें, दूरघ्राण निज आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दूरघ्राणत्वबुद्धि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ १०॥

नेत्र विषय के दूर देख लें, दूरावलोकन आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दूरदर्शित्वबुद्धि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ११॥

कर्ण विषय के बाहर सुन लें, दूरघ्राण निज आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दूरश्रवणत्वबुद्धि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ १२॥

बिन अभ्यास पूर्व दश जानें, दशपूर्वी निज आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दशपूर्वित्वबुद्धि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ १३॥

अंग-पूर्व श्रुत पूरा जानें, पूर्व चर्तुदश आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वित्वबुद्धि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ १४॥

जानें बिन उपदेश तत्त्व को, प्रत्येक बुद्धि आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं प्रत्येकबुद्धित्व-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ १५॥

शास्त्र पढ़े बिन करें निरुत्तर, जग के वादी आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं वादित्वबुद्धि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ १६॥

तन्तु-पुष्प-जल आदि श्रेणि पर, चारण चलते आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं जलजंघातंतु-मेघपुष्पपत्रफल-अग्निधूमज्योति-मरुत्निमित्ताश्रय-चारण-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ १७॥

नभ में थल सम चलें धर्म को, नभचारण ऋषि आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं नभचारण-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ १८॥

अणिमा महिमा लघिमा आदिक, अष्ट विक्रिया आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अणिमा-महिमा-लघिमा-गरिमा-प्राप्ति-प्राकाम्य-वशित्व-विक्रिया-ऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ १९॥

स्वेच्छा से अदृश्य हो चलते, अंतर्धानी आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अंतर्धानविक्रिया-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ २०॥

दीक्षा से समाधि तक करते, संत उग्रतप आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं उग्रतप-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ २१॥

अनशन कर तन चमके-महके, यही दीप्ततप आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दीप्ततप-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ २२॥

तप्त लोह पर जल ज्यों भोजन, मल बिन होता आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं तप्ततप-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ २३॥

कवलचन्द्र सम करें महातप, वरने आतम आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं महातप-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ २४॥

रोगी तन उपसर्ग सहन कर, करें घोरतप आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं घोरतप-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ २५॥

घोरपराक्रम करते लेकिन, हीन न तन से आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं घोरपराक्रमतप-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ २६॥

ब्रह्मचर्य धर करें घोर तप, अचल मेरु सम आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं घोरब्रह्मचर्यतप-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ २७॥

इक मुहूर्त में श्रुत का चिंतन, करें मनोबल आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं मनोबल-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ २८॥

इक मुहूर्त में श्रुत का पाठन, करें वचनबल आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं वचनबल-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ २९॥

लोक कनिष्ठा पर रख सकते, ऋद्धि कायबल आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं कायबल-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३०॥

छूकर हवा दवा सम सुख दे, आमर्षौषधि आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३१॥

मुँह के मल छू रोग शमन हों, खेल्ल-औषधी आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३२॥

बाह्य अंग मल छूकर वायु, जल्ल-औषधी आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं जल्लौषधि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३३॥

कर्णादिक मल छू निरोग हों, मल-औषधी आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं मलौषधि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३४॥

मल मूत्रादिक छूकर वायु, बनती औषध आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं विप्रुषौषधि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३५॥

जिनका तन मल सब औषध छू, पवन करे सुख आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं सर्वौषधि-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३६॥

अमृत वाणी सुन विष उतरें, मुखनिर्विष वह आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं मुखनिर्विष-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३७॥

दृष्टि पड़े तो जहर उतरते, दृष्टिनिर्विष आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दृष्टिनिर्विष-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३८॥

मर जा कहने पर मर जाते, ऐसे कहें न आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं आशीर्विषरस-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ३९॥

दृष्टि कुपित कर दें तो मरते, पर ना करते आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं दृष्टिविष-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४०॥

अरस भोज्य कर में आकर हो, दूध सरीखा आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं क्षीरस्राविरस-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४१॥

कड़वा नीरस भोजन कर में, मधु जैसा हो आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं मधुस्राविरस-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४२॥

रूखा सूखा भोजन कर में, घृत जैसा हो आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं घृतस्राविरस-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४३॥

अरस-सरस भोजन अमृत सा, होता कर में आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अमृतस्राविरस-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४४॥

कटक करे मुनि शेष भोज्य पर, खत्म न हो रस आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानस-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४५॥

कटक रहे मुनि-गृह में लेकिन, जगह न कम हो आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं अक्षीणमहालय-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४६॥

सकल ऋद्धिमय ऋषि हों फिर भी, चहें मोक्षसुख आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं सकलऋद्धिसंपन्न-सर्वमुनिभ्यो अर्घ्यं...॥ ४७॥

चौदह सो बावन गणधर ऋषि, चौबीसी के आहा।
गणधर मुनि को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थेश्वराग्रिमसभावर्ति-द्विपञ्चाश्च-चतुर्दशशतगणधरेभ्यो अर्घ्यं...॥ ४८॥

उन्तिस लख अड़तालिस हजार मुनि, चौबीसी के आहा।
समवसरण के साधक मुनि को, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थेश्वराग्रिमसभावर्ति एकोन्त्रिंशल्लक्षाष्टचत्वारिंशत्-सहस्त्र-प्रमित मुनिभ्यो अर्घ्यं...॥ ४९॥

चार विदिशाओं के अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

कुल नौ सौ पच्चीस कोटि अरु, त्रेपन लख सत्-बीस हजार।
नौ सौ अड़तालीस रहे हैं, अकृत्रिम जिनप्रतिमा द्वार॥
अकृत्रिम जिन बिम्ब भजें हम, अकृत्रिम आतम पाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु गुण गाएँ॥

ॐ ह्रीं नवशतपंचविंशति-कोटित्रिपंचाशल्लक्ष-सप्तविंशतिसहस्रनवशाष्ट-चत्वारिंशत्-प्रमितऊर्ध्व-मध्य-अधोलोकसंबंधी-सर्व-अकृत्रिम जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५०॥

आठ करोड़ छप्पन लख होते, सत्तानवे रहे हजार।
चार शतक अस्सी कुल मंदिर, अकृत्रिम की जय-जयकार॥
प्रति मंदिर में बिम्ब एक सौ-, आठ भजें हम सुख पाएँ।
अर्घ्य चढ़ा हम पर्व प्रतिष्ठा, करें नमोस्तु गुण गायें॥

ॐ ह्रीं अष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्र-चतुःशत-एकाशीति-प्रमित ऊर्ध्व-मध्य-अधोलोकसंबंधी-अकृत्रिम-सर्वजिनालयेभ्यो अर्घ्यं...॥ ५१॥

(दोहा)

अनेकांत स्याद्वादमय, निज आगम भण्डार।
पर्व प्रतिष्ठा में भजें, तिरने को संसार॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव-अनेकांत-स्याद्वादमयी-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो अर्घ्यं...॥५२॥

मंगलमय मंगलकरण, वीतराग विज्ञान।
पर्व प्रतिष्ठा में भजें, धर्म रूप निर्वाण॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्म-रत्नत्रयधर्म-दयायुक्त-जिनधर्माय: अर्घ्यं...॥ ५३॥

समुच्चय पूर्णार्घ्य

(ज्ञानोदय)

भजें पंच पद मंगल उत्तम, शरण त्रिकाली प्रभु चौबीस।
बीस विदेही प्रभु भज सूरी, उपाध्याय मुनि को नत शीश॥
ऋद्धीश्वर मुनि धर्म शास्त्र भज, अकृत्रिम जिन धाम भजे।
अर्घ्य चढ़ाकर पर्व प्रतिष्ठा, कर नमोस्तु जिन धर्म सजे॥

ॐ ह्रीं सर्वयागमण्डलदेवताभ्य: पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

पंच मंगलोत्तम शरण, त्रय चौबीसी बीस।
ऋद्धीश्वर जिनबिम्ब के, गुण गाएँ नत शीश॥

(जोगीरासा)

श्री अरहंत-सिद्ध-आचारज, उपाध्याय मुनि ध्याएँ।
पूज्यपरम पद पाँचों ध्या के, कष्ट मिटें सुख पाएँ॥
चारों-मंगल-उत्तम-शरणा, भव से हमें बचाएँ।
त्रैकालिक चौबीस जिनेश्वर, हमको पार लगाएँ॥१॥
सीमंधर आदिक प्रभु बीसों, करें विदेही ध्यानी।
दीक्षा दे आचार्य सँभालें, पाठक कर दें ज्ञानी॥
धर्म-धुरंधर पूर्ण दिगम्बर, ऋद्धीश्वर मुनि साधु।
अकृत्रिम जिनबिम्ब जिनालय, करते हम पर जादू॥२॥
चौबीसों के गणधर सब मुनि, हमको दिए सहारे।
जिनवाणी मैया की नैया, हमको पार उतारे॥

धर्मज्ञान से मोक्षधाम की, हमको मिले सवारी।
पर्व प्रतिष्ठा के द्वारा हम, सुख पाएँ अति भारी॥३॥
पूज्य यागमण्डल विधान कर, शुद्धि विशुद्धि बढ़ाएँ।
आज नहीं हम कल या परसों, निजी प्रतिष्ठा पाएँ॥
सिद्धों जैसी लोकशिखर पर, करें प्रतिष्ठत आतम।
इसी भावना से 'मुनिसुव्रत', पूज रहे परमातम॥४॥
पूज्य पंचकल्याणक हो या, वेदि-प्रतिष्ठा प्यारी।
मानस्तंभ बिम्बस्थापन, शुद्धी की तैयारी॥
कलशारोहण इत्यादिक हों, अनुष्ठान प्रभु वाले।
करो यागमण्डल भक्ती से, खुलें सुखों के ताले॥५॥

(दोहा)

पर्व प्रतिष्ठा दे हमें, आत्मशक्ति निज ज्ञान।
अतः यागमण्डल किया, करके नमोस्तु ध्यान॥

ॐ ह्रीं सर्वयागमण्डल-देवताभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(हरीगीतिका)

जो भव्य प्राणी यागमण्डल, यज्ञ कर पूजा करें।
वो रोग-भय-दुख-पाप हरके, शांति से झूमा करें॥
सुख-संपदा तजकर विभावी, चेतना मुक्ति वरें।
'सुव्रत' तभी कल्याण हेतु, शुद्धि को भक्ति करें॥

(पुष्पांजलिं....)

जिनवाणी स्तुति

जाकर आते हैं, भगवन! जाकर आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥
अक्षर मात्रा पद स्वर व्यंजन, शब्दों अर्थों की।
आगम शास्त्र पठन पाठन में, हम सब भक्तों की॥
सरस्वती माँ हर त्रुटियों की, क्षमा चाहते हैं।
हमको केवलज्ञान दान दो, भक्त चाहते हैं
जाकर आते हैं...॥

(कायोत्सर्गं...)

पंचकल्याणक विधान प्रारंभ

गर्भकल्याणक पूजन

स्थापना (हरीगीतिका)

तीर्थंकरों का मातृ के जब, गर्भ में हो अवतरण।
वो गर्भकल्याणक करें सुर, पूज कर प्रभु के चरण॥
तब राज आँगन सज सुखी हो, भक्त श्रद्धा से सजें।
मन वेदिका पर तुम वसो हम, गर्भ कल्याणक भजें॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकरा अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

प्रासुक जल भक्त चढ़ाएँ, शुद्धातम पर ललचाएँ।
कल्याणक गर्भ मनाए, हम करने नमोस्तु आए॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं...।

प्रभु समता धरके महकें, हम चंदन लेकर चहकें।
कल्याणक गर्भ मनाए, हम करने नमोस्तु आए॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चंदनं...।

तुम हो अक्षय अविनाशी, हम पूजन के अभिलाषी।
कल्याणक गर्भ मनाए, हम करने नमोस्तु आए॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षतान्...।

प्रभु आतमकली खिलाए, हम पंखुड़ि बनने आए।
कल्याणक गर्भ मनाए, हम करने नमोस्तु आए॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पाणि...।

निज भोज्य बनाओ खाओ, प्रभु थोड़ा हमें चखाओ।
कल्याणक गर्भ मनाए, हम करने नमोस्तु आए॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं...।

हम बने दीप घी ज्योति, तो जिन-सम चमकें मोती।
कल्याणक गर्भ मनाए, हम करने नमोस्तु आए॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं...।

कर्मों को धूल चटाई, सो मुक्ति हार ले आई।
कल्याणक गर्भ मनाए, हम करने नमोस्तु आए॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं...।

जड़ की जड़ तुमने काटी, फल चढ़े मोक्ष की घाटी।
कल्याणक गर्भ मनाए, हम करने नमोस्तु आए॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः फलं...।

अंतिम है गर्भ तुम्हारा, तुम सम हो अर्घ्य हमारा।
कल्याणक गर्भ मनाए, हम करने नमोस्तु आए॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (सखी)

सर्वार्थसिद्धि से चयकर, आषाढ़ कृष्ण दूजा पर।
मरु माँ के गर्भ वसंता, जय आदिनाथ भगवंता॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तजकर सुर विजय अनुत्तर, फिर जेठ अमावस पाकर।
विजया माँ गर्भ वसंता, जय अजितनाथ भगवंता॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णामावस्यायां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तज ग्रैवेयक के आसन, जब शुक्ल अष्टमी फाल्गुन।
सुसेना गर्भ वसंता, जय हो शंभव भगवंता॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीशंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तज विजय अनुत्तर सृष्टि, वैशाख शुक्ल की षष्ठी।
सिद्धार्था गर्भ वसंता, जय अभिनंदन भगवंता॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रावण सुदि दूजा आई, माँ गर्भ मंगला पाई।
तज स्वर्ग विमान जयंता, जय सुमतिनाथ भगवंता॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयायां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

छठ माघ कृष्ण की प्यारी, माँ गर्भ सुसीमा धारी।
तज ग्रैविक गर्भ वसंता, जय पद्मप्रभु भगवंता॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठ्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तज ग्रैवेयक की माटी, छठ भाद्र शुक्ल जब आती।
माँ पृथ्वी गर्भ वसंता, जय सुपार्श्व प्रभु भगवंता॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लषष्ठ्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

वदि चैत्र पंचमी प्यारी, माँ गर्भ लक्षणा धारी।
दे सपने आए जिनन्दा, जय चंद्रप्रभु भगवंता॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नवमी सुदि फाल्गुन आई, माँ रमा गर्भ सुख पाई।
अपराजित स्वर्ग तजंता, जय सुविधिनाथ भगवंता॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

वदि चैत्र अष्टमी पाए, अच्युत से च्युत हो आए।
फिर पाए गर्भ सुनन्दा, जय हो शीतल भगवंता॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुभ ज्येष्ठ कृष्ण की षष्ठी, पुष्पोत्तर तज हुई वृष्टि।
विमला के गर्भ वसंता, जय श्रेयांसनाथ भगवंता॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णषष्ठ्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

छठ कृष्ण रही आषाढ़ी, तज महाशुक्र की गाड़ी।
विजया के गर्भ वसंता, जय वासुपूज्य भगवंता॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठ्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(चौपाई)

त्याग शतार कंपिला आए, ज्येष्ठ कृष्ण जब दसमी पाए।
जय श्यामा के गर्भ वसंता, जय हो विमलानाथ भगवंता॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

एकम कार्तिक कृष्ण महाना, पुष्पोत्तर का तजे विमाना।
सर्वयशा के गर्भ वसंता, जय हो अनंतनाथ भगवंता॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपदायां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तज सर्वार्थसिद्धि की तृष्णा, त्रयोदशी वैशाखी कृष्णा।
गर्भ सुव्रता माँ के वसंता, जय हो धर्मनाथ भगवंता॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णत्रयोदश्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भादों कृष्ण सप्तमी जब हो, तज सर्वार्थसिद्धि को तब तो।
ऐरा माँ के गर्भ वसंता, जय हो शांतिनाथ भगवंता॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रावण कृष्णा दसमी पाकर, कामदेव चक्री तीर्थंकर।
श्रीमति माँ के गर्भ वसंता, जय हो कुंथुनाथ भगवंता॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

फाल्गुन शुक्ला तीजा पाके, हस्तिनागपुर सुर से आके।
गर्भ सुमित्रा माँ के वसंता, जय हो अरहनाथ भगवंता॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अपराजित तज मिथिला आए, चैत्र शुक्ल जब एकम् पाए।
प्रभावती के गर्भ वसंता, जय हो मल्लिनाथ भगवंता॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदायां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रावण दूजा कृष्ण महाना, अपराजित का त्याग विमाना।
पद्मा माँ के गर्भ वसंता, जय हो मुनिसुव्रत भगवंता॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

आश्विन कृष्ण दूज तिथि पाकर, प्राणत तज आए मिथलापुर।
विपुला माँ के गर्भ वसंता, जय हो नमीनाथ भगवंता॥

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तज अपराजित आए द्वारिका, जब हो कार्तिक षष्ठी शुक्ला।
मात शिवा के गर्भ वसंता, जय हो नेमिनाथ भगवंता॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठ्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्ण दूज वैशाख विशाखा, काशि आए तज प्राणत शाखा।
वामा माँ के गर्भ वसंता, जय हो पार्श्वनाथ भगवंता॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

छठ आषाढ़ शुक्ल की बेला, कुण्डलपुर में स्वर्ग सा मेला।
त्रिशला माँ के गर्भ वसंता, जय हो महावीर भगवंता॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

चौबीसों के हम भजें, सभी गर्भ कल्याण।
करें नमोस्तु अर्घ्य ले, हो जग का काल्याण॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

भजें गर्भ कल्याण तो, होते मालामाल।
तीर्थंकर चौबीस की, अतः कहें जयमाला॥

(ज्ञानोदय)

अगर किसी सामान्य जीव ने, देख जगत के कष्टों को।
जिनशासन पर श्रद्धा रखकर, हरना चाहा दुःखों को॥
करुणा-जल आँखों में भरकर, विश्वशांति वह चाहे जो।
अनंत-भव जल चुल्लू-सा कर, सम्यग्दर्शन पाए वो॥ १॥
निज-भावों की बढ़ा विशुद्धि, भाय भावना सोलह वो।
तीर्थंकर प्रकृति को बाँधे, जाए स्वर्ग-नरक वह तो॥
गर्भकाल छह मास पूर्व से, इन्द्रादिक शुभ नगर रचें।
अष्टकुमारी छप्पनदेवी, सेवा कर शुचि गर्भ करें॥ २॥
पन्द्रह महीने रत्न बरसते, माँ सोलह सपने देखे।
सुबह सभा में राजा से वह, फल पूछे जाने हरखे॥
पुत्र बनेगा प्रभु तीर्थंकर, अतः गर्भ कल्याणक हो।
पुण्यफला है तीन ज्ञानधर, धर्म तीर्थ का नायक हो॥ ३॥
पर्व गर्भ कल्याणक उत्सव, सचमुच देव मनाते हैं।
हम श्रद्धा से करें महोत्सव, जीवन धन्य बनाते हैं॥
हमें भक्ति से यों लगता ज्यों, हम भी अंतिम गर्भ धरें।
विश्वशांति में योगदान दें, 'सुव्रत' निज की सैर करें॥ ४॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पर्व गर्भ कल्याण के, भक्त भजें चौबीस।
कटें गर्भ के दुख सभी, हो नमोस्तु नत शीश॥

(इत्याशीर्वादः...पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

जन्मकल्याणक पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

जन्म दिवस का उत्सव करना, पाना पुनः जन्म दुख है।
किन्तु जन्म पा जन्म न पाना, पर्व जन्मकल्याणक है॥
मानव दानव करें पर्व जब, मिले शांति पल भर सबको।
चौबीसों सम हो जन्मोत्सव, सो पूजें जन्मोत्सव को॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित-श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकरा अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय-भक्ति बेकरार...)

चौबीसी दरबार है, जन्मों का त्यौहार है।
घर आँगन नगरी दुनियाँ में, हो रही जय जयकार है॥
जन्म लिया पर जन्म न लें अब, अतः जन्म को टारे तुम।
पर्व जन्म कल्याणक करके, जल जैसे हों प्यारे हम ॥ चौबीसी...

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं...।

द्वन्द्वों का संताप हरे सो, बने स्व-पर को शीतल तुम।
पर्व जन्म कल्याणक करके, चन्दन से हों शीतल हम॥ चौबीसी...

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चंदनं...।

पर की आकुलता त्यागी सो, अक्षयसुख को पाए तुम।
पर्व जन्म कल्याणक करके, अक्षय बनने आए हम ॥ चौबीसी...

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षतान्...।

जग के सारे खेल त्यागकर, आतम पुष्प खिलाए तुम।
पर्व जन्म कल्याणक करके, काम हरण को आए हम॥ चौबीसी...

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पाणि...।

जड़ का भोग भोगना तजकर, शुद्धातम को चखते तुम।
पर्व जन्म कल्याणक करके, निज नैवेद्य चाहते हम ॥ चौबीसी...

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः नैवेद्यं...।

हम अज्ञानी तुम हो ज्ञानी, हम अँधयारे सूरज तुम।
पर्व जन्म कल्याणक करके, निज दीपक से चमकें हम॥ चौबीसी...

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं...।

कर्म जीतते सारे जग को, कर्मजयी परमातम तुम।
पर्व जन्म कल्याणक करके, धूप चढ़ा हों पावन हम॥ चौबीसी...

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं...।

आतम भिन्न-भिन्न कर पुद्गल, रत्नत्रय फल पाए तुम।
पर्व जन्म कल्याणक करके, मोक्षमहल फल चाहें हम॥ चौबीसी...

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो फलं...।

जन्मोत्सव कर मृत्यु महोत्सव, सो दीपोत्सव पाए तुम।
पर्व जन्म कल्याणक करके, तुम सम अर्घ्य सजाएँ हम॥ चौबीसी...

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(दोहा)

नाभिराय के आँगने, जन्म लिए भगवान्।
चैत्र कृष्ण नवमी हुई, जग में पूज्य महान्॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ला दशमी माघ को, जन्मे अजितकुमार।
जितशत्रु के आँगने, जय-जय हो त्यौहार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशम्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा, जन्मे शंभवनाथ।
जितारि नृप के आँगने, पर्व किए सुरनाथ॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लपूर्णिमायां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीशंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

माघ शुक्ल बारस जहाँ, जन्मे नन्दननाथ।
पिता स्वयंवर के यहाँ, किए पर्व सुरनाथ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल ग्यारस लिए, सुमतिनाथ प्रभु जन्म।
पिता मेघरथ के यहाँ, जन्मोत्सव की धूम॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस कार्तिक कृष्ण को, पद्मोत्सव की धूम।
धरणराज घर जन्म की, बजे बधाई झूम॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ज्येष्ठ शुक्ल बारस हुई, झूम-झूम विख्यात।
सुप्रतिष्ठ घर आँगने, जन्मे सुपार्श्वनाथ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादशम्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, जन्मे चन्द्र जिनेश।
महासेन के चन्द्रपुर, उत्सव किए सुरेश॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

एकम अगहन शुक्ल को, जन्मोत्सव त्यौहार।
राजा श्रीसुग्रीव के, आए सुविधिकुमार॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्ल-प्रतिपदायां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीसुविधिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघकृष्ण बारस लिए, शीतल जिनवर जन्म।
राजा दृढ़रथ भद्रपुर, पर्व करें हो धन्य॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, प्रभु श्रेयांस अवतार।
विष्णु नृप घर आँगने, हो बधाई त्यौहार॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादशम्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस फाल्गुन कृष्ण को, पूज्योत्सव घड़ि आई।
राजा श्रीवसुपूज्य के, बाजे जन्म बधाई॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौथी शुक्ला माघ में, जन्मे विमल जिनेन्द्र।
कृतवर्मा गृह राज्य में, उत्सव करें सुरेन्द्र॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्मे बाल अनन्त।
सिंहसेन नृप के यहाँ, बाजे ढोल मृदंग॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस शुक्ला माघ को, जन्मी धार्मिक साँच।
भानुराज के आँगने, दिल-दिल घोड़ी नाँच॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदह कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्मे शांति विराट।
विश्वसेन के आँगने, ज्ञान-बताशा बाँट॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रथम शुक्ल वैशाख को, जन्मे कुंथुजिनेश।
सूर्यसेन के आँगने, बाजे ढोल विशेष॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस अगहन शुक्ल में, जन्मे अरह अडोल।
पिता सुदर्शन के यहाँ, भक्त बजाएँ ढोल॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस अगहन शुक्ल में, जन्मे मल्लि जिनन्द।
कुम्भराज गृह राज्य में, शोर-बुलौआ-नन्द॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

वैशाख कृष्ण दशमी तिथि, जन्मे सुव्रतनाथ।
सुमित्रनृप के आँगने, सुर नर नाँचे साथ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

दसें कृष्ण आषाढ़ को, जन्मे प्रभु नमिनाथ।
लड्डू राजा विजय ने, बाँटे नाँचे साथ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रावण षष्ठी शुक्ल में, हुआ जन्म का शोर।
समुद्रविजय के आँगने, नेमि किए किलकोर॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण ग्यारस तिथि, जन्मे पार्श्वकुमार।
विश्वसेन काशी करे, नाँच-नाँच त्यौहार॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस शुक्ला चैत्र को, जन्मे वीर जिनेश।
सिद्धारथ घर आँगने, उत्सव किए सुरेश॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

चौबीसों के हम भजें, सभी जन्म कल्याण।
करें नमोस्तु अर्घ्य ले, हो जग का कल्याण॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर जन्मकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

जन्म लिए पर जन्म से, रहित जन्म कल्याण।
अतः कहें जयमालिका, पाने को निर्वाण॥

(ज्ञानोदय)

पंचेन्द्रिय के विषयों की जब, पूरी आश न कर पाते।
उसको पूरा करने प्राणी, जन्म-मरण करते जाते॥
जन्म बराबर कष्ट नहीं है, मरण बराबर ना हो भय।
चेतन यों जब चिंतन करते, तभी बनें वे सुखी अभय॥ १॥
उसका जन्म भले हो लेकिन, जन्म न अब होगा आगे।
यही जन्म कल्याणक करके, भाग्य सितारे भी जागे॥
जन्मोत्सव में शचि इन्द्राणी, शिशु को गोदी में ले ज्यों।
निजपर्याय धन्य कर लेती, सम्यग्दर्शन पा ले त्यों॥ २॥
दर्श पर्श का हर्ष उसे हो, फिर सौधर्म प्रभु को ले।
मेरु पर जन्माभिषेक कर, करने ताण्डव नृत्य चले॥
मति-श्रुत-अवधि तीन ज्ञान ले, तीर्थंकर प्रभु जन्म धरें।
तत्त्व बोध दे राग-द्वेष हर, हम भक्तों को धन्य करें॥ ३॥
एक कुटुम का हुआ पुण्य तो, बेटा संस्कारी जन्मे।
जब हो पुण्य देश का तब तो, संत सदाचारी जन्मे॥
तीन लोक का अगर पुण्य हो, तो तीर्थंकर प्रभु जन्में।
'सुव्रत' जन्म सफल करने को, चाहे प्रभु जैसे जन्में॥ ४॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पर्व जन्म कल्याण के, भक्त भजें चौबीस।
कटें जन्म के दुख सभी, हो नमोस्तु नत शीश॥

(इत्याशीर्वादः...पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

सूरज चमका
जगा न सका मुझे
जगे पक्षी

तप कल्याणक पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

दुर्लभ मानव तन को पाकर, करें तपस्या वीरा।
आदिनाथ से महावीर तक, जिनशासन के हीरा॥
वैरागी ज्यों बने दिगम्बर, नभ अम्बर त्यों गूँजें।
हृदय हमारे आओ प्रभु हम, तपकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित-श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकरा अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

ले रत्नत्रय की नैया, तुम सम हम बनें तिरैया।
ले नीर नमोस्तु गूँजें, हम तपकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं...।

सम्बन्ध दुखों के छोड़े, हम तुम्हें मनाने दौड़े।
ले चन्दन नमोस्तु गूँजें, हम तपकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चंदनं...।

रुचि आडम्बर से भागी, मुनि बने दिगम्बर त्यागी।
ले अक्षत नमोस्तु गूँजें, हम तपकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षतान्...।

जब याद मुक्तिवधू आई, तब राजवधू न सुहाई।
ले पुष्प नमोस्तु गूँजें, हम तपकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पाणि...।

रख भूखी प्यासी काया, तब आतम का रस पाया।
ले चरू नमोस्तु गूँजें, हम तपकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं...।

जिन सूर्य-चाँद कहलाओ, क्यों भक्त-कमल न खिलाओ।
ले दीप नमोस्तु गूँजें, हम तपकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं...।

तुम रूपी कर्म नशाए, निज-चिन्मय को महकाए।
ले धूप नमोस्तु गूँजें, हम तपकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं...।

जब ध्यान लगाए साँचे, फल मुक्तिबाग के चाखे।
ले फलम् नमोस्तु गूँजें, हम तपकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो फलं...।

मुनि-चरण जहाँ पड़ जाते, वो तीर्थ मोक्ष बन जाते।
ले अर्घ्य नमोस्तु गूँजें, हम तपकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (दोहा)

चैत्र श्याम नवमी दिना, बने दिगम्बर नाथ।
मोह तजा आतम भजा, जिन्हें नमें नत माथ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ला नवमी माघ को, तजे अजित दुख-धाम।
संत बने अंतरमुखी, सुर-नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लनवम्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

मगशिर शुक्ला पूर्णिमा, राग-आग सब छोड़।
पंथ धार निर्ग्रंथ प्रभु, जिन्हें नमन कर जोड़॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्लपूर्णिमायां तपकल्याणकमण्डित श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

द्वादश शुक्ला माघ में, बन्धन-क्रन्दन छोड़।
दीक्षा ले नन्दन जिन्हें, वंदन हो सिर मोड़॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नवीं शुक्ल वैशाख को, तजे अयोध्या धाम।
सुमतिनाथ तप से सजे, हम सब करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लनवम्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस कार्तिक कृष्ण को, तजे मोह संसार।
बने पद्म प्रभु संत जी, जिन्हें नमन शत बार॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस शुक्ला ज्येष्ठ में, त्याग मोह-संसार।
प्रभु सुपार्श्व मुनि बन गए, गूँजे जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादशम्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, तजे मोह-संसार।
मुनि बनकर तप से सजे, जय-जय बारम्बार॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

एकम अगहन शुक्ल को, कर परिग्रह की शाम।
सुविधि तपोत्सव से सजे, जिनको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदायां तपकल्याणकमण्डित श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघकृष्ण बारस तिथि, तजे राग की वस्तु।
नग्न सहेतुक में हुए, शीतल मुनि को नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, राजा धर संन्यास।
ग्रन्थ त्याग निर्ग्रंथ बन, जय-जय मुनि श्रेयांस॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादशम्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस फाल्गुन कृष्ण को, तजे मोह जग-वस्तु।
वासुपूज्य मुनि बन गए, सादर जिन्हें नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीवासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्मतिथि दीक्षा धरे, छोड़े पर-संसार।
श्रमण संत विमलेश को, वन्दन बारम्बार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

उसी जन्म तिथि में हुआ, शुभ दीक्षा कल्याण।
स्वामी संत अनन्त को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीअनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्मोत्सव की धूम में, लखकर उल्कापात।
धर्मनाथ मुनि बन पुजे, भक्त हुए नत माथ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म-तिथी में तप धरे, तजे अशांति शोर।
शांतिनाथ मुनि को हुई, नमोस्तु चारों ओर॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीशांतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म तिथि में चक्र तज, कुन्थुप्रभु तप धार।
जय-जय जिनशासन हुआ, जिन्हें नमन बहु बार॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां तपकल्याणकमण्डित श्रीकुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दशमी अगहन शुक्ल को, देखे मेघ विनाश।
संत अरहप्रभु को नमन, जो धारे संन्यास॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लदशम्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीअरनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चंचल बिजली की चमक, जन्म तिथी में देख।
मल्लिप्रभु दीक्षित हुए, जिन्हें नमन सिर टेक॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादश्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दशमी वदि वैशाख को, परिग्रह का गृह छोड़।
मुनिसुव्रत तप से सजे, सो नमोस्तु कर जोड़॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

संत जन्म तिथि में बनें, पा रत्नत्रय वस्तु।
निर्ग्रंथी नमिनाथ को, बारम्बार नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीनमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रावण षष्ठी शुक्ल में, पशुओं की सुन त्राण।
नेमिप्रभु तप से सजे, हम तो करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण एकादशी, पार्श्व बने निर्ग्रंथ।
तप कल्याणक हम भजें, हो नमोस्तु जयवंत॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अगहन दसवीं कृष्ण को, तजा मोह परिवार।
बने तपस्वी तप सजे, होती जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं मगशिरकृष्णदशम्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

चौबीसों के हम भजें, दीक्षा के कल्याण।
करें नमोस्तु अर्घ्य ले, हो जग का कल्याण॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

दीक्षा ले तप से सजे, चौबीसों जिनरूप।
सो जयमाला गुण कहें, पाने नग्न स्वरूप॥

(जोगीरासा)

जय हो! जय हो! नग्न दिगम्बर, ऋषि मुनियों की जय हो।
साधु संत के दर्शन करके, अंतस पाप विलय हो॥

पिछी कमण्डल धारी मुनि का, दर्शन पावन होता।
जिनके दर्शन करके यह भव, चुल्लू भर सा होता॥ १॥
धरती-अम्बर पूर्ण दिगम्बर आते सभी दिगम्बर।
आडम्बर क्यों ओढ़ लिया जब, जाते सभी दिगम्बर॥
इस चिंतन से चौबीसों कुछ, निमित्त पा वैरागे।
लौकांतिक की सुने भावना, सफल परिग्रह त्यागे॥ २॥
दीक्षा की जब हुई पारणा, पंचाश्चर्य सुहाएँ।
तप कल्याणक सभी मनाएँ, हम भी पुण्य कमाएँ॥
रत्नत्रय संतान प्राप्त कर, बांझपना निज खोना।
कर पुरुषार्थ दिगम्बर हों हम, नहीं भाग्य से होना॥ ३॥
जब तक बालक रहे दिगम्बर, उसे लगे माँ प्यारी।
ज्यों जवान होता तो उसको, वधू चाहिए न्यारी॥
जिनवाणी के पुत्र बनें हम, चौबीसों सम होकर।
मुक्तिवधू से करें स्वयंवर, पूर्ण दिगम्बर होकर॥ ४॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित श्रीवृषभादिवीरांत-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

तप कल्याणक से प्रभु, भक्त भजें चौबीस।
जिन साक्षी दीक्षा धरें, हो नमोस्तु नत शीश॥

॥ इत्याशीर्वादः॥

❑ ❑ ❑

जिनवाणी स्तुति

(ज्ञानोदय)

अक्षर मात्रा पद स्वर व्यंजन, शब्द रेफ या अर्थों की।
शास्त्र पठन-पाठन में जो भी, कमियाँ रहीं अनर्थों की॥
आलस भूल कषायें मेरी, क्षमा करें कल्याणी माँ।
ज्ञान-दीप जलवाकर मेरा, भला करें जिनवाणी माँ॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र नवकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मंत्र जपें नौ बार॥

(कायोत्सर्ग...)

श्रीतीर्थंकर वृषभसागरजी महामुनिराज की पूजन

स्थापना (दोहा)

पूज्य वृषभसागर बने, जैसे ही मुनिराज।
करें नमोऽस्तु भक्तजन, हम तो पूजें आज॥

(सखी)

जय पूज्य वृषभसागर जी, मुनिवर को पड़गाकर ही।
पूजा में बोलें स्वाहा, हम करें नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभसागरजी महामुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

ओ! भव जल के तिरैया, अब थामो हमरी नैया।
ले जल अब बोलें स्वाहा, हम करें नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभसागरजी महामुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

मुनि काया का बस दर्शन, पा परमशांत हो तन-मन।
ले चन्दन बोलें स्वाहा, हम करें नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभसागरजी महामुनीन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

मुनिमुद्रा अक्षय प्यारी, वह पाने ढोक हमारी।
ले अक्षत बोलें स्वाहा, हम करें नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभसागरजी महामुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान्...।

मुनि चरण जहाँ पड़ जाते, वैराग्यपुष्प खिल जाते।
ले पुष्प कहें अब स्वाहा, हम करें नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभसागरजी महामुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

मुनि त्यागे राज-रसोड़े, वह रस चखने सब दौड़े।
नैवेद्य लिए हो स्वाहा, हम करें नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभसागरजी महामुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

मुनिदृष्टि जहाँ पर करते, वहाँ ज्ञान के दीपक जलते।
ले दीपक बोलें स्वाहा, हम करें नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभसागरजी महामुनीन्द्राय मोहांऽधकारविनाशनाय दीपं...।

मुनिवर ज्यों ध्यान लगाएँ, त्यों कर्मशत्रु घबराएँ।
ले धूप कहें अब स्वाहा, हम करें नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभसागरजी महामुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बोकर रत्नत्रय फसलें, मुनि मोक्ष-फलों के रस लें।
ले फल बोलें अब स्वाहा, हम करें नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभसागरजी महामुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं...।

ओ! जिनवाणी के लाला, जब करो मुक्ति वरमाला।
तो हमको नहीं भुलाना, बाराती हमें बनाना॥
मुनि शिवरथ से जाएँगे, हम गजरथ करवाएँगे।
ले अर्घ्य कहें अब स्वाहा, हम करें नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभसागरजी महामुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं...॥

जयमाला (दोहा)

नग्न दिगम्बर वृषभमुनि, जग में पूज्य महान।
अतः कहें जयमालिका, करके नमोस्तु ध्यान॥

(चौपाई)

जय मुनिराज वृषभसागरजी, त्याग दिये सब जग पाकर भी।
बचपन से था वैभव भारी, राजा बने कुशल अधिकारी॥ १॥
मुख्य सुनंदा-नंदा रानी, भरत-बाहुबली द्वय सुत ज्ञानी।
बेटी ब्राह्मी और सुन्दरी, इत्यादिक सुखमय थी नगरी॥ २॥
पूर्व लाख तेरासी बीती, पूर्व लाख इक शेष बची थी।
नीलांजना नृत्य न भाया, बन वैरागी मुनिपद पाया॥ ३॥
भेदाभेद धरे रत्नत्रय, नभ-अम्बर में गूँजे जय-जय।
तप कल्याणक देव मनाएँ, हम मुनि बनने भाव सजाएँ॥ ४॥
अतः लगाया हमने चौका, धन्य किए गुरु देकर मौका।
और एक मौका गुरु देना, नित आहार यहीं पर लेना॥ ५॥
पंचाश्चर्य अनोखे अब हों, भक्तों के हर काम सुलभ हों।
जब तक मिले ना मुक्ति सजनी, पिछी कमण्डल से हो मँगनी॥ ६॥
तुम सम हम भी दूल्हे बनकर, मुक्तिवधू से करें स्वयंवर।
सो 'सुव्रत' को पास बुला लो, निज से निज का मिलन करा दो ॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभसागरजी महामुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय जयमाला महार्घ्यं...।

(दोहा)

यही भावना भक्त की, मिले धर्म का पंथ।
संत वृषभसागर नमो, बनने को निर्ग्रंथ॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

ज्ञान कल्याणक पूजन

स्थापना (विष्णु)

पूज्य दिगम्बर आत्मध्यान कर, हों केवलज्ञानी।
वीतराग-सर्वज्ञ-हितैषी, सबके कल्याणी॥
हृदय वेदि पर ध्यान लगाने, आ जाओ ज्ञानी।
पर्व ज्ञानकल्याणक भजने, हो नमोस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित-श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकरा अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

रत्नत्रय के आभूषण से, आतम शृंगारें।
स्वस्थ मस्त हों भक्त आप सम, सो आए द्वारे॥
निजदर्शन को प्रासुक जल ले, हम बोलें स्वाहा।
पर्व ज्ञानकल्याणक को अब, हो नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं...।

केवलज्ञानी तीर्थंकर के, समवसरण लगते।
खुद चैतन्य-छाँव में रहकर, जग शीतल करते॥
चारु-चरण पाने चंदन ले, हम बोलें स्वाहा।
पर्व ज्ञानकल्याणक को अब, हो नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चंदनं...।

जग ने किसका साथ निभाया, साथ न दे तन-धन।
सो सिंहासन कभी न छूते, परमौदारिक तन॥
वीतराग बनने अक्षत ले, हम बोलें स्वाहा।
पर्व ज्ञानकल्याणक को अब, हो नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षतान्...।

आत्मझील में ध्यानशील से, ज्ञानकमल खिलते।
सो कमलासन से चउ अंगुल, प्रभु ऊपर उठते॥
शील-झील के पुष्प बनें सो, हम बोलें स्वाहा।
पर्व ज्ञानकल्याणक को अब, हो नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पाणि...।

भोजन बिन कैसे प्रभु जीते, सोचें शंकालु।
संज्ञादिक कुछ दोष न प्रभु में, कहते श्रद्धालु॥

निज-रस को नैवेद्य हाथ ले, हम बोलें स्वाहा।
पर्व ज्ञानकल्याणक को अब, हो नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं...।

केवलज्ञान सूर्य ने हर ली, मोह-घटा काली।
मिटी परिग्रह की सब भ्रमणा, पा के दीवाली॥
मोह मिटाने दीप ज्योति ले, हम बोलें स्वाहा।
पर्व ज्ञानकल्याणक को अब, हो नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं...।

रूपी कर्म अरूपी आतम, भिन्न स्वभाव कहे।
फिर भी जीवों को दुख दे सो, ज्ञानी नशा रहे॥
हरें कर्म आतंक धूप ले, हम बोलें स्वाहा।
पर्व ज्ञानकल्याणक को अब, हो नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं...।

पाप कर्मफल दुख ही देंगे, पाप करो फिर क्यों।
पुण्य करो तो समवसरण में, पुण्यफला सम हों॥
पाप त्यागने फल गुच्छे ले, हम बोलें स्वाहा।
पर्व ज्ञानकल्याणक को अब, हो नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो फलं...।

जड़ के इतने वैभव पाकर, तीर्थंकर छोड़ें।
सचमुच जग सम्राट यही हैं, इन्हें हाथ जोड़ें॥
ज्ञानसम्पदा भजें अर्घ्य ले, हम बोलें स्वाहा।
पर्व ज्ञानकल्याणक को अब, हो नमोस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (दोहा)

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण में, घातिकर्म सब नाश।
बने केवली लोक ये, नम्र हुआ बन दास॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादश्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस शुक्ला पौष को, पाकर केवलज्ञान।
अजित बने भगवन अजित, जिन्हें नमन अविराम॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ल-एकादश्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक कृष्णा चौथ में, पाकर केवलज्ञान।
श्रावस्ती के लाल को, नमन करें धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौषशुक्ल चौदश मिली, निज निधि केवलराज।
जय हो अभिनन्दन विभो, नमन आपको आज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस शुक्ला चैत्र को, पाए पद अरिहंत।
ज्ञानोत्सव में गूँजती, जय-जय सुमति महंत॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल पूनम हुई, जग में पूज्य महान्।
घाति नशा प्रभु पद्म ने, पाया केवलज्ञान॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

षष्ठी फाल्गुन कृष्ण में, लोकालोक दिखाए।
सुर-नर नाथ सुपार्श्व को, सादर शीश नवाए॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सातें फाल्गुन कृष्ण में, बने केवली नाथ।
चन्द्रपुरी के चन्द्र को, झुकें सभी के माथ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक शुक्ला दूज को, सुविधि हरे अज्ञान।
समवसरण तब लग गया, जिन्हें नमन अविराम॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस कृष्ण पौष में, कर अज्ञान जयोऽस्तु।
शीतल प्रभु सर्वज्ञ को, करते भक्त नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्णा माघ अमास को, उपजा केवलज्ञान।
सुन-नर सब मिल पूजते, जय श्रेयांस भगवान्॥

ॐ ह्रीं माघकृष्ण-अमावस्यायां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दूज माघ सुदि को प्रभो, घाति कर्म परिहार।
वासुपूज्य तीर्थेश को, नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

षष्ठी कृष्णा माघ में, पाए केवलज्ञान।
विमलेश्वर अर्हंत को, नमस्कार धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्णा चैत्र अमास को, कर्म नशा ये चार।
बने अनन्त अरिहन्त जी, जिन्हें नमोस्तु बहुबार॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष पूर्णिमा को हरे, घाति कर्म संसार।
धर्म संत अर्हन्त को, नमोस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दशमी शुक्ला पौष में, पाया केवलराज।
नमन शांति अर्हन्त को, करती भक्त समाज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल की तीज में, पा कैवल्य सुवस्तु।
कुन्थुप्रभु अर्हन्त को, हम तो करें नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लतृतीयायां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

बारस कार्तिक शुक्ल को, हरे घातिया धूल।
अरह केवली को नमन, अर्पित श्रद्धा फूल॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण की दूज में, पाए प्रभु कैवल्य।
मल्लिप्रभु तीर्थेश को, नमन हरे अब शल्य॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नवी कृष्ण वैशाख को, हर ली संकट रात।
भज चाहें कैवल्य हम, जय मुनिसुव्रत नाथ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां केवलज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस अगहन शुक्ल में, हुआ ज्ञान कल्याण।
परमपिता नमिनाथ को, दुनियाँ करे प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लैकादशम्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ला एकम् क्वार को, घाति कर्म जयोऽस्तु।
मोक्षमार्ग अध्यात्म-दा, नेमि प्रभु को नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लप्रतिपदायां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्ण चतुर्थी चैत्र को, जीते सब उपसर्ग।
पार्श्व प्रभु को नमोस्तु कर, करें ज्ञान का पर्व॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण चतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

दसें शुक्ल वैशाख को, पाया केवलज्ञान।
शासननायक बन पुजे, महावीर भगवान्॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूणार्घ्य

चौबीसों के हम भजें, पूज्य ज्ञानकल्याण।
करें नमोस्तु अर्घ्य ले, हो जग का कल्याण॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

ज्ञान ज्ञान बौछार है, करें आत्म प्रक्षाल।
अतः ज्ञानकल्याण की, गाएँ हम जयमाल॥

(विष्णु)

जय हो! जय हो! ज्ञान पर्व के, चौबीसों स्वामी।
जिनके उत्सव करें देव नर, बन के अनुगामी॥
संत घातिया कर्म घात कर, हों केवलज्ञानी।
तीर्थंकर अरिहंत बने ज्यों, शुद्धातम ध्यानी॥१॥
समवसरण में दिव्य देशना, हो ओंकारमयी।
धर्म तीर्थ का हो संचालन, शुभ कल्याणमयी॥
भरे भव्य जीवों से कोठे, पूजें अर्हंता।
आत्मतीर्थ को पाने निज में, खोजें भगवंता॥२॥
भाग्य भरोसे किसने पाया, मोक्ष मार्ग साँचा।
कौन दिगम्बर संत बना है, किसका यश नाँचा॥
अतः ज्ञान उपदेश यही कि, शुभ पुरुषार्थ करें।
पर्व ज्ञानकल्याणक भजकर, 'सुव्रत' मोक्ष चलें॥३॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

ज्ञान विश्व का सार है, ज्ञान मोक्ष का द्वार।
अतः ज्ञानकल्याण भज, करें आत्म उद्धार॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

दिव्यध्वनि अर्घ्य

(जोगीरासा)

समवसरण में तीर्थंकर की, दिव्यदेशना होती।
निजानन्द को मुख्य बनाकर, दे रत्नत्रय मोती॥
द्रव्य तत्त्व व धर्म कर्म के, पदार्थ के स्वर गूंजें।
देव शास्त्र गुरु के निमित्त से, अर्घ्य चढ़ा हम पूजें॥
प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं, सूत्र चार अनुयोगी।
द्वादशांग अनेकांत धर्म ही, आतम के सहयोगी॥
धर्म श्रमण-श्रावक का देकर, जुदा करें जड़ चेतन।
हम नमोस्तु कर अर्घ्य चढ़ाएँ, धन्य करें निज-जीवन॥

ॐ ह्रीं द्रव्यतत्त्वपदार्थ-चउ अनुयोग-अनेकांत-द्वादशांगस्वरूप-धर्मोपदेशक जिनाय अर्घ्यं...।

विहार निवेदन

धर्म भेद विज्ञान समझकर, इन्द्र करे प्रभु सेवा।
दिव्य अर्चना करके कहता, हे! देवों के देवा॥
भव्य भूमि पर विहार की अब, बरसाओ प्रभु धारा।
सो रत्नत्रय की खेती कर, मिले मोक्ष फल प्यारा॥

(दोहा)

समवसरण तजकर किए, प्रभु जी जहाँ विहार।
उस भूमि को नमोस्तु कर, करें आत्म उपकार॥

ॐ ह्रीं नमोऽर्हते-भगवते-विहारावस्थाप्राप्त-श्रीजिनाय अर्घ्यं...।

समवसरण वंदना अर्घ्य

इस विधि जिन नव देवता, जग के पालनहार।
जिन्हें नमोस्तु अर्घ्य ले, हम करते जयकार॥

ॐ ह्रीं जिनदेव-गुरुश्रुतादि-सकल-नवदेवताभ्यो अर्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

मोक्ष कल्याणक पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

केवलज्ञानी समवसरण तज, ज्यों ही योगनिरोध करें।
तीजा शुक्ल ध्यान करके भव, पाँच लघुस्वर योग्य करें॥
चौथा करके हरें कर्म सो, मोक्ष में न अब देरी हो।
मना मोक्षकल्याणक अब तो, निज गजरथ की फेरी हो॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणमण्डित-श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकरा अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(चौपाई)

सिद्धों सम समकित सावन हों, हम श्रद्धा जल से पावन हों।
अतः णमो सिद्धाणं गूँजें, पर्व मोक्षकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं...।

ज्ञानमहल के ओ निर्माता, दो ज्ञानी-चंदन सा छाता।
अतः णमो सिद्धाणं गूँजें, पर्व मोक्षकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चंदनं...।

दे दो दर्शन सिद्ध जिनन्दा, हम पाएँ अक्षय आनन्दा।
अतः णमो सिद्धाणं गूँजें, पर्व मोक्षकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षतान्...।

वीर्यसैन्य ले काम नशाए, शील-झील के पुष्प खिलाए।
अतः णमो सिद्धाणं गूँजें, पर्व मोक्षकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पाणि...।

सूक्ष्मस्वरूपी सिद्ध रसोई, चखें हमारी इच्छा होई।
अतः णमो सिद्धाणं गूँजें, पर्व मोक्षकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं...।

अवगाहन की पाईं गलियाँ, भक्तों को दो दीपावलियाँ।
अतः णमो सिद्धाणं गूँजें, पर्व मोक्षकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं...।

अव्याबाध न देते बाधा, फल का फल श्रद्धा से ज्यादा।
अतः णमो सिद्धाणं गूँजें, पर्व मोक्षकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं...।

श्रद्धालु को नहीं भुलाना, सिद्ध शहर में शीघ्र घुमाना।
अतः णमो सिद्धाणं गूँजें, पर्व मोक्षकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो फलं...।

मोक्ष आठ गुणमय सिद्धों का, अर्घ्य आठ गुणमय द्रव्यों का।
अतः णमो सिद्धाणं गूँजें, पर्व मोक्षकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (दोहा)

माघ कृष्ण चौदश दिना, हरे कर्म का भार।
हिमगिरि से शिवपुर गए, हम पाए त्यौहार॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ल पंचमी चैत्र को, मधुवन से कर ध्यान।
गए अजितप्रभु मोक्ष को, जिन को नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल पंचम्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल छठ को प्रभु, पाए मोक्ष महीश।
धवलकूट सम्मेदगिरि, को वन्दन नत शीश॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लषष्ठ्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

छठी शुक्ल वैशाख को, गए मोक्ष के धाम।
नन्दनप्रभु गिरिराज को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल एकादशी, मोक्ष महोत्सव सार।
भक्त सुमतिप्रभु को, करें नमन अनन्तों बार॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौथ कृष्ण फाल्गुन हुई, पद्मप्रभु के नाम।
मोक्ष गए सम्मेद से, लाखों जिन्हें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्थ्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सातें फागुन कृष्ण में, प्रभु सुपार्श्व गए मोक्ष।
गिरिवर प्रभास कूटमय, हम तो देते धोक॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सम्मेदाचल से गए, चन्द्र मोक्ष के धाम।
सातें फागुन शुक्ल में, सुर नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भाद्र अष्टमी शुक्ल को, सुविधि बने सिद्धीश।
मुक्त हुए सम्मेद से, जिन्हें झुकाएँ शीश॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्ल-अष्टम्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अश्विन शुक्ला अष्टमी, इक हजार मुनि साथ।
मोक्ष गए सम्मेद से, नमोस्तु शीतलनाथ॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्ल-अष्टम्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूनम श्रावण शुक्ल को, सम्मेदशिखर के धाम।
मोक्ष गए श्रेयांस प्रभु, सादर जिन्हें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लपूर्णिमायां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भाद्र शुक्ल दस लक्षणी, अनंत चौदस साथ।
चंपापुर से पूज्य प्रभु, मुक्त जिन्हें नत माथ॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

आठें कृष्ण अषाढ़ को, विमल प्रभु को मोक्ष।
सम्मेदाचल से हुआ, जिनको सादर धोक॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्ण-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

उसी ज्ञान तिथि में गए, मोक्ष, अनन्त ऋषीश।
सम्मेदाचल को नमन, मिले अनन्ताशीष॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ज्येष्ठ चतुर्थी शुक्ल को, मोक्ष धर्म प्रभु पाए।
सुदत्तकूट शाश्वत गिरि, जिनको शीश नवाए॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस कृष्णा ज्येष्ठ को, मोक्ष गए शान्तीश।
कुन्दप्रभ कूट शाश्वतगिरि, को वंदन नत शीश॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शिखर ज्ञानधरकूट से, मोक्ष कुन्थुप्रभु पाए।
मोक्ष जन्म तप साथ में, हम तो शीश नवाए॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत अमावस कृष्ण में, मोक्ष लिए प्रभु लूट।
नमन करें अरनाथ को, पूजें नाटककूट॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पाँचे फागुन शुक्ल में, मोक्ष मल्लिप्रभु पाए।
शाश्वत संबलकूट को, हम तो शीश झुकाए॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लपंचम्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

फागुन द्वादश कृष्ण को, इक हजार मुनि साथ।
मोक्ष गए सम्मेद से, नमोस्तु सुव्रतनाथ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस कृष्ण वैशाख को, मोक्ष गए नमिनाथ।
शिखर मित्रधरकूट को, नमन करें नत माथ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

आठें (सातें) शुक्ल अषाढ़ को, प्राप्त किए निर्वाण।
नेमिप्रभु, गिरनार को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्ल-अष्टम्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, मोक्ष सप्तमी पर्व।
नमोस्तु पार्श्व निर्वाण को, भजें शिखरजी सर्व॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक कृष्ण अमास को, हरे कर्मरज सर्व।
पावापुर से मोक्ष जा, दिए दिवाली पर्व॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण-अमावस्यायां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

चौबीसों के हम भजें, पूज्य मोक्षकल्याण।
करें नमोस्तु अर्घ्य ले, हो जग का कल्याण

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरमोक्षकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

चिदानन्द चिद्रूप हैं, वीतराग विज्ञान।
निष्कलंक सिद्धेश को, हो नमोस्तु धर ध्यान॥

(चौपाई)

जय हो! जय हो! सिद्ध जिनातम, चिदानंद चैतन्य चिदातम।
मुमुक्ष जन के लक्ष्य प्रयोजन, सो नमोस्तु हम करते भगवन॥ १॥
जिनशासन जब तुम्हें सुहाया, तब तुमने इक स्वप्न सजाया।
मोक्षमार्ग पर चलना हमको, सिद्ध स्वरूपी बनना हमको॥ २॥
पूरे करने ऐसे सपने, त्याग दिए जो ना थे अपने।
देव-शास्त्र-गुरु पहले पूजे, पंचलब्धि के स्वर तब गूंजे॥ ३॥
तब सम्यग्दर्शन को पाकर, किया अनंत भव जल चुल्लु भर।
सम्यग्ज्ञान करण्डक चमके, द्रव्य तत्त्व पदार्थ सब समझे॥ ४॥
फिर तीर्थंकर प्रकृति बाँधी, पर की आसक्ती सब त्यागी।
बने दिगम्बर संत महंता, जगत पूज्य अर्हंत अनंता॥ ५॥
फिर जड़ के संबंध नशाए, सर्वोत्तम प्रभु सिद्ध कहाए।
नहीं पादुका अंजन सिद्धा, नहीं दिग्विजय गुटिका सिद्धा॥ ६॥
जग में जितने सिद्ध प्रसिद्धा, उनसे आप विलक्षण सिद्धा।
मुख्य रूप से आठ गुणी हो, तथा अमूर्तिक नंत गुणी हो॥ ७॥
लोक शिखर पर जाकर टिकते, चरम चक्षुओं से न दिखते।
चाहे लोक किसी के वश हो, चाहे दुनियाँ तहस नहस हो॥ ८॥
चाहे संकट की बारिश हो, किन्तु सिद्ध न टस से मस हो।
पूज्य सिद्ध पद जो भी ध्याए, वो भी सिद्ध परम पद पाए॥ ९॥
अतः मोक्ष कल्याणक पूजें, जय हो! जय हो! के स्वर गूँजें।
'सुव्रतसागर' करें नमोस्तु, सिद्ध सिद्ध की दे दो वस्तु॥ १०॥

(दोहा)

वृषभादिक वीरान्त जिन, परम सिद्ध चौबीस।
सिद्ध भक्ति कर सिद्ध हों, सो नमोस्तु नत शीश॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकमण्डित-वर्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

पर्व प्रतिष्ठा यज्ञ कर, पूर्णाहूति होम।
नमोस्तु कर 'सुव्रत' बनें, सिद्ध स्वरूपी ओम्॥
(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

प्रशस्ति

पृथ्वीपुर में होएगा, पूज्य पंचकल्याण।
पूर्व सात दिन में लिखे, यह वा याग विधान॥
शांतिनाथ भगवान के, पर्व जन्म तप मोक्ष।
चढ़ा लाडु निर्वाण का, चाहें आतम सौख्य॥
दो हजार सत्रह मई, बुध चौबिस तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥
॥ इति शुभं भूयात्...॥

❑ ❑ ❑

जाकर आते हैं (भजन-स्तुति)

जाकर आते हैं, भगवन! जाकर आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥
सदा आपके चरणों में हम, रहना तो चाहें।
किन्तु पाप की मजबूरी से, हम ना रह पाएँ॥
पाप घटाने पुण्य बढ़ाने, फिर से आते हैं।
पुनः आपके...॥१॥
दुनियाँ हमें कभी ना रुचती, इसे छोड़ना हैं।
माया ममता के हर बंधन, हमें तोड़ना है॥
सदा आपके साथ रहें ये, भाव बनाते हैं।
पुनः आपके...॥२अ
यह आना-जाना भगवन् अब, हमें न करना है।
सदा आपकी छत्र-छाँव में, अब तो रहना है॥
जीते मरते हरदम 'सुव्रत', भूल न पाते हैं।
पुनः आपके...॥३॥

❑ ❑ ❑

महार्घ्य (हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित- अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंच-परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारणऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि-वीरांतान् चतुर्विंशति तीर्थंकर आद्यानांआद्ये जम्बूद्वीपे-भरतक्षेत्रे-आर्यखण्डे-भारतदेशे-मध्यप्रदेशे-...जिलान्तर्गते... मासोत्तममासे... मासे...पक्षे...तिथौ...वासरे...मुनि-आर्यकाणां-श्रावक श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादि-महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ (हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥

तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोस्तु बारम्बार॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादि-परमेष्ठिनः पूजाविधिं विसर्जनं करोमि। अपराध-क्षमापणं भवतु। यः यः यः।

(उक्त मंत्र पढ़कर ठोने पर पुष्प क्षेपण कर विसर्जन करें)

श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप)

❑ ❑ ❑

भजन

हे! स्वामी तेरी पूजा करूँ मैं-२,
हर पल तेरी अर्चा करूँ मैं॥
सावन का महीना होगा, उसमें होगी राखी।
विष्णु मुनि जैसी सेवा करूँ मैं, हर पल...॥१॥
भादों का महीना होगा, उसमें होगी वारिश।
दसलक्षण की चर्चा करूँ मैं, हर पल...॥२॥
कार्तिक का महीना होगा, उसमें होगी दीवाली।
वीर प्रभु जैसी मुक्ति वरूँ मैं, हर पल...॥३॥
फागुन का महीना होगा, उसमें होगी होली।
अष्टाह्निक के रंग रंगूँ मैं, हर पल...॥४॥
वैशाख का महीना होगा, उसमें होगी अख-ती।
राजा श्रेयांस-सोम सा दान करूँ मैं, हर पल...॥५॥
आषाढ़ का महीना होगा, उसमें होगा चौमासा।
विद्या गुरु की भक्ति करूँ मैं, हर पल...॥६॥

❑ ❑ ❑

अहा! पंचकल्याणक गजरथ, महा पुण्य वाले करते।
हम भी उसमें शामिल होकर, गुरु आज्ञा सिर पर धरते॥
विद्या गुरुवर नाथ हमारे, दो आशीष कृपा कर दो।
महा महोत्सव में पधारकर, सोने पे सुहाग कर दो॥

❑ ❑ ❑

विद्या गुरुवर मोक्ष प्राप्ति को, घर तजकर बन बैठे संत।
फिर समाधि कर इंद्र बन चुके, फिर मानव फिर मुनि अरहंत॥
समवसरण में दिव्यध्वनि फिर, देकर हमें बता देना।
हे! गुरु अपना समवसरण तब, हमरे नगर लगा लेना॥

❑ ❑ ❑